विद्याधर-कथा



लेखक

राजेश्वर झा
बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना

प्रकाशक

श्री अमरनाथ झा
ग्रा० रसुआर, पो० निर्मली,
जिला० सहरसा

विद्याधर-कथा



लेखक

राजेश्वर झा

बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना





प्रकाशक

श्री अमरनाथ झा

ग्रा॰ रसुआर, पो॰ निर्मली,

जिला॰ सहरसा

दाम दू टाका

मुद्रक
श्री कामेश्वर प्रसाद
कालिका प्रेस,
आर्यकुमार रोड, पटना–४

समर्पण

कनकरेखा सदृश दिव्य कन्या जे शापवश मात्र
अल्पकालहिक निमित्त एहि भूतल पर अवतीर्ण भए
शापान्त भेला पर पुनि अपन लोक कें
प्रत्यागमन करैछ हुनकहिँ ई दिव्य-कथा
समर्पण करल जाइछ ।

—राजेश्वर झा

प्राक्कथन

सरस कथाक सूत्रपात भारतवर्ष मे प्रायः सम्यताक संगहि भेल। ऋग्वेद मे कतिपय सूक्त एहेन पाओल जाइछ जाहि मे दुइ वा तीन पात्र मध्य परस्पर कथनोपकथनक समावेश कएल गेल अछि। एहि सूक्त कें संवादसूक्त कहल जाइछ। भारतीय साहित्यक कतिपय अंगक उद्गम एहि संवादसूक्त सँऽ भेल अछि। सामान्य स्तुतिपरक सूक्तहुँ मे भिन्न-भिन्न देवताक प्रसंग मे मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद आख्यानक उपलब्धि पाओल जाइछ। संहिता मध्य जाहि कथाक सूचना मात्र पाओल जाइछ ओकर विस्तृत वर्णन बृहद्देवता मे तथा षड्गुरुशिष्यक 'कात्यायन सर्वानुक्रमणीक' वेदार्थदीपिकाक टीका मध्य कएल गेल अछि। यास्क निरुक्त मे तथा सायण अपन भाष्य मे एहि कथाक रूप एवं प्राचीन आधार कें प्रदर्शित करबाक प्रयत्न कएलैन्ह अछि। अतः ऐतिहासिक दृष्टिकोणे विश्लेषण कएला पर वेद कें कथाक मूल स्रोत मानब उचित प्रतीत होइछ। अतएव ब्राह्मण ग्रन्थक विधि एवं अर्थवादक विस्तृत विन्यास सँऽ उद्विग्न तथा उपनिषदक कठोर दार्शनिक तथ्यक विश्लेषण मे क्लान्त वैदिक ऋषि कें प्रायः मानसिक व्यथा कें हरि हृदय कें शान्त ओ शीतल बनेबार्थ सरस कथाक आवश्यकता बूझि पड़लैन्ह। फलस्वरूप "पुरुरवा ओ उर्वशी", "देवापि ओ शन्तनु, "च्यवन ओ सुकन्या" इत्यादि रूपें वैदिक साहित्य मे सरस कथाक समावेश कएल गेल।

वैदिक कथा कालक्रमें परिष्कृत ओ परिवर्धित भए परवर्ती साहित्य मे उद्धृत भेल जाहि सँऽ ऋग्वेदक कतिपय कथा रामायण, महाभारत एवं पुराण मे पाओल जाइछ। प्राचीन कालक कथा साहित्य मे जातक-कथा कें सभ सँऽ प्राचीन एवं सर्वापेक्षा पैघ मानल जाइछ मुदा एहि मे कतेक एहनो कथा अछि जे भगवान बुद्ध सँऽ पूर्वक थिक। आख्यान साहित्यक अपूर्व ज्ञाता प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् डा० हर्टल महोदय अपन अनुसन्धानक द्वारा सिद्ध कएल जे पंचतंत्रक मूल ग्रंथ 'तन्त्राख्यायिका' छल जाहि सँऽ सम्बद्ध जैन कथासंग्रह अछि। डा० हर्टल महोदयक अनुसार जातकक आधार तत्कालीन ब्राह्मण आख्यान थिक। बौद्ध एहि आख्यान कें अपनानुसार नव रूप मे परिणत कएल। फलस्वरूप मूल आख्यान मे विषमता आएल। डा० हर्टल 'बृहत्-कथा' तथा 'तन्त्राख्यायिका' कें पञ्चतन्त्राहिक परिवर्तित रूप मानैत छथि।

पञ्चतन्त्रक सर्व प्रथम अनुवाद नौशेरवाँ (५३१ ई०) पहलवी भाषा मे करबौलैन्ह जकर अनुवाद सिरिक, अरेबिक, लैटिन तथा युरोपक समस्त भाषा मे भेल जाहि सँऽ पञ्चतन्त्रक कथा 'विपईक कथा' नामे युरोप मे अद्यावधि पाओल जाइछ।

सातवाहन नरेशक सभाकवि गुणाढ्य पैशाची भाषा मे बृहत्कथा नामक एक गोट बिराट कथा समुच्चयक निर्माण कएलैन्ह जकर अलौकिकता एवं सरसताक प्रख्याति दूर-दूर देश तक प्रसारित भेल। गुणाढ्यक पतिष्ठाक प्रसंग मे गोवर्धनाचार्य अपन ग्रन्थ 'आर्यासप्तशती' मे कहैत छथि—

> अतिदीर्घजीविदोषाद् व्यासेन यशोऽपहारितं हन्त।
> कैर्नोच्येत गुणाढ्यः स एव जन्मान्तरापन्नः॥

जे गुणाढ्य जन्मान्तरापन्न व्यास छलाह। संस्कृत साहित्य मे गुणाढ्यक प्रतिष्ठा वाल्मीकि ओ व्यासहिक सदृश छलैन्ह।

गुणाढ्यक वृहत्कथा सँऽ एहि समय दुःस्प्राप्य अछि मुदा दण्डीक 'काव्यादर्श', सुबन्धुक 'वासवदत्ता', बाणक 'हर्ष-चरित' आदि ग्रन्थ मे एहि कथाक उल्लेख पाओल जाइछ। त्रिविक्रमभट्ट नलचम्पू मे—धनुषेव गुणाढ्येन निःशेषो रंजितो जनः आदि रूप मे एकर प्रशंसा कएलैन्ह अछि। वृहत्कथाक तीन संस्कृत अनुवाद—(१) बुद्धस्वामी कृत 'वृहत्कथाश्लोकसंग्रह', (२) क्षेमेन्द्र कृत 'बृहत्कथामंजरी' तथा (३) सोमदेव कृत 'कथासरित्सागर' अहुखन उपलब्ध पाओल जाइछ।

बुद्धस्वामीक वृहत्कथाश्लोकसंग्रहक अंश मात्रहिँ उपलब्ध पाओल जाइछ जाहि मे केवल काव्यशैली केँ ग्रहण कए कथानक केँ बाह्य आख्यान तथा अलंकृत वर्णन सँऽ व्यर्थ लादबाक प्रयास कएल गेल अछि। वृहत्कथाश्लोकसंग्रह २८ सर्गक अपूर्ण ग्रन्थ थिक। एहि ग्रन्थक कर्त्ता बुद्धस्वामी ईशाक पाँचम शताब्दीक लगभग अपन ग्रन्थक निर्माण कए गुप्तकालीन स्वर्ण युगक संस्कृतिक साँच मे ओ वृहत्कथा केँ ढालबाक उपक्रम कएलैन्ह। एहि ग्रन्थ मध्य नरवाहनदत्तक अट्ठाइस विवाह मे सँऽ महज ६ विवाहक प्रसंगक उल्लेख पाओल जाइछ। कथाक प्रारम्भ मे उज्जयिनीक प्रशंसा तथा ओतएक शासक महासेन प्रद्योतक मृत्यु एवं पितृहन्ता भेला सँऽ अपयशक भागी भेला कारणे हुनक पुत्र गोपालक द्वारा सिंहासनक त्याग तथा तत्पश्चात् हुनक भ्राता पालक द्वारा राज्य ग्रहण एवं पालकक द्वारा राज्य त्याग कएला पर गोपालकक पुत्र अवन्तिवर्धन द्वारा सिंहासन पर बैसबाक प्रसंग मे उल्लेख पाओल जाइछ। तदुपरान्त सुरसमंजरीक संग हुनक प्रेमकथा तथा चारीम सर्ग मे नरवाहनदत्तक प्रेमकथा ग्रन्थ मध्य सन्निहित अछि।

बुद्धस्वामीक पश्चात् वृहत्कथाक एक प्राकृत संस्करण जैन परम्परा मे संघदासगणि वसुदेव हिण्डीक नाम सँऽ निर्माण कएलैन्ह। यद्यपि एहि ग्रन्थ मे ओ वृहत्कथे केँ आधार बनौलैन्ह मुदा ग्रन्थक काया एवं उद्देश्य मे पूर्ण परिवर्तन कएलैन्ह। जतए वृहत्कथा लौकिक काम-कथा छल ओतए संघदास वसुदेव हिण्डी केँ धर्म कथाक रूप देल तथा जैन धर्मक प्रभाव केनहार कतिपय प्रसंग केँ एहि मे यथास्थान सम्मिलित कएल। अहू सँऽ अत्यधिक महत्वक परिवर्तन कथाक नायक केँ बदलबा मे पाओल जाइछ। पैशाची वृहत्कथा मे वत्सराज उदयनक पुत्र नरवाहनदत्तक विवाहक कथा अछि, किन्तु संघदास अन्धक वृष्णिवंशक प्रसिद्ध पुरुष वसुदेव केँ अपन नायक बनौलैन्ह। वसुदेव हिण्डी २९ लम्बक एवं लगभग ११ हजार श्लोकक प्राकृत भाषाक गद्य शैलीक ग्रन्थ थिक। हिण्डी शब्दक अर्थ परिभ्रमण वा पर्यटन होइछ।

कथाक नायक भने किओ होथु मुदा वृहत्कथाक प्रख्याति कालिदासक युग मे ततेक छल जे मालवाक ग्रामवृद्ध उदयनक कथा बड़ दक्षता सँऽ कहैत छलाह। उदयन सँऽ सम्बन्धित कथा केवल वासवदत्ता एवं उदयनक प्रेम-कथे तक सीमित नहि भए नरवाहनदत्तक कतिपय विवाहक कथाक सन्निहित भेला सन्ता मूल वृहत्कथाक स्वरूप काम-कथा वा शृंगार-कथा जेकाँ छल। नरवाहनदत्त देश-देशान्तरक भ्रमण करैत जतए कतहु जाइत छलाह ओतए हुनक यात्राक पर्यवसान विवाहक रूप मे होइत

छल। जेना व्यापारी धन अर्जन कए सकुशल गृह आपस अएला पर सिद्ध यात्री बनैत अछि ओहि तरहें नरवाहनदत्तक चरित्र मे द्वीपान्तर-पर्यटनक सिद्ध यात्रा एक नवीन रानीक संग विवाहक रूप मे होइत छल।

क्षेमेन्द्रक युग काश्मीरक इतिहास मे असन्तोष, षड्यन्त्र, नैराश्य तथा रक्तपातक युग छल। तत्कालीन काश्मीर नरेश अनन्त (१०२८ ई०—१०६३ ई०) अपन मानसिक दुर्बलता एवं बौद्धिक शिथिलताक वशीभूत भए अपन ज्येष्ठ पुत्र कलश कें राज्य दए (१०६३ ई०) किछु कालक उपरान्त ओ पुनि राज्य ग्रहण कएल तथा एहि अनन्तर ओ १०७७ ई० मे राज-काज सँ विरत भए १०८१ ई० मे आत्महत्या कएलेन। हुनक विदुषी रानी सुर्यवती अपन पतिक संग सती भए गेलीह। एहि पिता-पुत्रक राजत्वकाल मे क्षेमेन्द्रक जीवनक अवधि पाओल जाइछ।

क्षेमेन्द्र अपन युगक अशान्त वातावरण सँ ततेक असन्तुष्ट तथा मर्माहत छलाह जे ओ ओकरा सुधारबाक तथा दुष्टताक स्थान पर शिष्टताक एवं स्वार्थक स्थान पर परमार्थक भावना कें दृढ़ करबाक निमित्त अपन द्रुतगामिनी लेखनी कें काव्यक विविध अंगक रचना मे लगौलैन्ह। अतएव लोकक चरित्रक सुधार एवं मनोरञ्जनक भावना सँ प्रेरित भए क्षेमेन्द्र रामायण तथा महाभारतक प्रख्यात् कथाक संक्षिप्त वर्णन रामायणमञ्जरी तथा भारतमञ्जरीक नाम सँ प्रस्तुत कएलैन्ह। एहि ग्रन्थक निर्माणक पश्चात् ओ ओहि कथा रत्नाकर कें जे बृहत्कथाक नाम सँ पैशाची भाषा मे साहित्य जगत मे प्रख्यात् छल संस्कृत मे रूपान्तर कएलैन्ह।

क्षेमेन्द्रक अन्य विशाल कथात्मक कृति थिक बोधिसत्त्वावदानकल्पलता। एहि मे भगवान बुद्धक प्राचीन जन्म सँ सम्बद्ध पारमितासूचक आख्यानक पद्यबद्ध वर्णन अछि। हीनयान मे जे स्थान जातकक अछि सएह स्थान महायान मे अवदानक अछि। 'अवदानक' अर्थ थिक शुभ्रचरित्र। एहि कल्पलता मे १०८ पल्लव (कथा) अछि जाहि मे अंतिम पल्लवक निर्माण पिताक मृत्योपरान्त क्षेमेन्द्रक पुत्र सोमेन्द्रक द्वारा सम्पन्न भेल।

बोधिसत्त्वावदानकल्पलताक रचनाक डेढ़ सए वर्षक अनन्तरहिं एहि ग्रन्थकें तिब्बती भाषा मे अनुदित होएबाक गौरव प्राप्त भेल। १२०२ ई० मध्य तिब्बतक एक मान्य विद्वान् कुन्दगह-ग्यांल-म्तशन कें हुनक भारत-यात्राक अभ्यन्तर काश्मीर मे शाक्य श्री पण्डित एहि ग्रन्थ कें उपहार स्वरूप भेंट कएलथिन्ह जे ७० वर्षक पश्चात् भारतीय पण्डित महाकवि लक्ष्मीकरक सहायता सँ तिब्बतक विख्यात् विद्वान् 'सोन्तोन लोचावे' फग्स पा लामाक आज्ञा सँ जे प्रसिद्ध कुब्ला खांक धर्मिक गुरु छलाह एहि ग्रन्थक पद्यानुवाद प्रस्तुत कएलैन्ह जे तिब्बती भाषाक एक नितान्त श्लाघनीय, अनुकरणीय एवं उदात्त काव्य मानल जाइछ। एक वैष्णव कविक कृति होएतहुँ बौद्धक द्वारा एहि तरहक आदर पाएब क्षेमेन्द्रक धार्मिक उदारता, विशाल हृदयता तथा सुन्दर काव्यशैलीक द्योतक थिक।

कथासरित्सागर गुणाढ्यक बृहत्कथा नामक ग्रंथक सार थिक। ई ग्रन्थ १२४ तरंग एवं १८ लम्बक मे विभक्त अछि। लम्बकक मूल संस्कृत रूप 'लम्भक' थिक। एक विवाह द्वारा एक स्त्रीक प्राप्ति 'लम्भ' कहल जाइत छल तथा तत्सम्बन्धी कथाक

हेतु 'लम्भक' शब्द प्रयुक्त भेल। तदनुसारे अलंकारवती लम्बक, शशांकवती लम्बक इत्यादि पृथक-पृथक कथाक नामकरण भेल।

कथासरित्सागरक मुख्य नायक थिकाह वत्सराज उदयन एवं महारानी वासवदत्ताक पुत्र नरवाहनदत्त जे पश्चात् विद्याधरक चक्रवर्तीत्व प्राप्त कएलैन्ह। किन्तु ई सँ मुख्य कथा थिक मुदा मुख्य कथाक अनन्तर नाना प्रसंगक कतिपय कथाक एहि अपूर्व ग्रन्थ मे संग्रह अछि जाहि सँ ग्रन्थक नामक सार्थकताक पुष्टि होइछ।

कथासरित्सागर मे वर्णित कथाक ऐतिहासिक महत्त्व पाओल जाइछ। गुणाढ्य बृहत्कथाक रचना सातवाहन राजाक राजत्व काल मे प्रथम-द्वितीय शताब्दीक मध्य कएने छलाह। आन्ध्र-सातवाहनक राजत्वकाल मे भारतीय व्यापारी स्थल, जल, पर्वत तथा ग्राम एवं नगरक तिल-तिल भूमि कें कूदेरि क्रय-विक्रय करैत छल। एवंकमें पूर्व सँ पश्चिम एवं उत्तर सँ दक्षिण तकक पहाड़ एवं समुद्र पर ओहि व्यापारिकक आधिपत्य छलैक। सातवाहन नरेशक मुद्रा पर अंकित चिन्ह सँ तत्कालीन सामुद्रिक व्यापार एवं द्विपान्तर-सन्निवेशक दिग्दर्शन होइछ। एहि प्रसंग मे मत्स्यपुराणक—"**द्वादशार्कमयो द्वीपः कर्द्रकादशपत्तन:**" वाक्य जे बारह द्वीप एवं एकादश पत्तन सँ निर्मित "नारायण महार्णवक" कल्पना करबैछ ताहि सँ बृहत्तर भारतक ओहि रूपक पुष्टि होइछ जकर श्रेय प्रायः सातवाहन नरेशहिं कें भए सकैत छैन्ह।

सातवाहन नरेशक राजत्वकालक उद्यमी व्यापारीक अनुभवक बहुमुखी सामग्री कें गुणाढ्य अपन विलक्षण प्रतिभा सँ बृहत्कथाक रूप मे प्रस्तुत कएलैन्ह जाहि मे विस्तृत भौगोलिक क्षितिज मे पूर्वक महोदधि एवं पश्चिमक रत्नाकरक द्वीप, नगर एवं वन प्रान्त आदि सन्निहित पाओल जाइत छल।

वस्तुतः एहि कथा मे वर्णित नगर एवं द्वीप वास्तविक छल जे आब ज्ञानक अभाव सँ काल्पनिक बूझि पड़ैछ। एकर अतिरिक्त विविध नगर ओ द्वीपक भिन्न-भिन्न वर्गक लोकक रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान एवं पूजा-अर्चाक मनोरञ्जक वर्णन एहि कथा मे पाओल जाइछ जे इतिहासक अपूर्व सामग्री थिक।

मानव जीवन सँ सम्बन्धित प्रायः प्रत्येक विषयक निरूपण एहि कथा मे पाओल जाइछ। एहि मे इतिहासक, धर्मक, राजनीतिक संग समाज सँ सम्बन्धित प्रायः प्रत्येक प्रकारक कथा पाओल जाइछ जकर उद्देश्य मात्र मनोरञ्जनहि नहि भए शिक्षा से हो होइछ।

जहाँ धरि कथाक संबन्ध जन-जीवन सँ अछि भारतक प्रत्येक भाग मे देवमंदिर सँ लए साधारण गृह मध्य ग्राम-वृद्धा अपन पौत्र एवं दौहित्र कें कथा सुनाए मनोरञ्जन करैत अछि। निःसन्देह एहि तरहक परिपाटी भारतीय जनश्रुतिक माध्यम सँ अन्धकारक गर्भ मे लुप्त भेल ऐतिहासिक तथ्यक विश्लेषण मे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध भेल। अतएव ई निर्विवाद अछि जे कथाक प्रख्याति भारतवर्ष मे सतत् रहल तथा एकहि कथा भिन्न-भिन्न धर्मावलम्बीक हाथ परि भिन्न-भिन्न आकार ग्रहण कएलक।

'विद्याधर-कथा' वस्तुतः 'शक्तिवेग-कथा' रूप मे कथासरित्सागर मे वर्णित अछि। विद्याधर जाति दिव्य जाति छल जे लोक साधनाक द्वारा प्राप्त करैत छल।

प्रायः ओहि समय बौद्ध धर्म मे वज्रयानक प्रख्याति भेला सँऽ समाज मध्य तान्त्रिकक एवं कपालिकक प्रधानता भेल तथा लोक श्मशान साधि एवं आन-आन अमानुषिक क्रिया द्वारा दिव्य स्त्री कें जे ओहि समय यक्षी ओ विद्याधरी नामे विख्यात् छलीह बश कए सिद्धि प्राप्त कए अपन मनोरथक पूर्त्ति करैत छल।

कथासरित्सागर मे वर्णित कथा कें हम स्वभाविकता ओ रोचकता दूहू कें दृष्टि मे राखि अपनानुसार कतहु कम कतहु बेसी कएल अछि। अतएव एहि मे मूलकथा कें भाषान्तर मे प्रतिपादन नहि कए ठाम-ठाम अपन भाषा एवं भावक सम्मिश्रण कएल अछि। अत: मूल कथाक बदलबाक प्रसंग मे हमर विज्ञप्ति अछि जे एहि मे हम अपन स्वेच्छा सँऽ कथाक परिवर्त्तन ओ परिमार्जन मात्र मनोरञ्जनक उद्देश्य सँऽ कएल अछि। कादम्बरीकर्त्ता बाणक एहि प्रसंगक उक्ति—"करोति रागं हृदि कौतुकाधिकम्" वस्तुत: यथार्थ थिक। स्वत: सोमदेव कथाक प्रादुर्भावक प्रसंग मे कथासरित्सागर मे शिवक द्वारा पार्वतीक मनोरञ्जनार्थ कहलैन्ह अछि।

'विद्याधर-कथा' कें जे कथासरित्सागरक पाँचम लम्बक मे वर्णित 'शक्तिवेग-कथा' नामे पाओल जाइछ मैथिली मे लिपिबद्ध करबाक एकमात्र उद्देश्य छल जे सरस कथाक रूपान्तर मातृभाषा मे कए एक महान् अभावक पूर्त्ति कएल जाए। अतएव पुस्तकाकार मे प्रस्तुत करैत अपार हर्ष सँऽ अछिए संगहि विश्वास सेहो अछि जे एहि कथाक रोचकता एवं सरसता मे हमर अल्प ज्ञानक फलस्वरूप भाषाक दोष एवं आन-आन त्रुटि सभ झँपि जाएत।

अन्त मे विज्ञप्ति अछि जे विद्वान् लोकनि एहि दिव्य कथाक त्रुटि दिसि ध्यान नहि दए केवल एकर रसास्वादन कए हमरा क्षमा करथि।

२१ मई, १९६७ ई०

राजेश्वर झा

विद्याधर-कथा

इदं गुरुगिरीन्द्रजाप्रणयमन्दरान्दोलना-
त्पुरा किल कथामृतं हरमुखाम्बुधेरुद्गतम् ।
प्रसह्य रसयन्ति ये विगतविघ्नलब्धर्द्धयो
धुरं दधति वैबुधीं भुवि भवप्रसादेन ते ॥

—कथासरित्सागर, पाँचम लम्बक

नगेन्द्र नन्दिनी पार्वतीक प्रबल प्रणय मन्दराचलक मन्थन मे महादेवक मुखारबिन्दरूपी पयोदधि सँऽ निस्सृत एहि कथा रूपी सुधा केँ जे सादर पान करैत अछि श्रो शिव प्रसादात् निर्विघ्न सिद्धि केँ पाबि दिव्य पद केँ प्राप्त करैत अछि ।

वत्सराजक सभा मे शक्तिवेगक आगमन

वत्सराज उदयन महारानी वासवदत्ताक संग बड़ आह्लाद सँऽ अपन पुत्र नर-वाहन दत्तक लालन-पालन करैत कालयापन करैत छलाह। एक समय वत्सराज केँ कोनो कारणवशात् राजकुमारक निमित्त चिंता सँऽ कातर जानि मन्त्री यौगन्धरायण सम्मुख आबि विज्ञप्ति कएल जे "हे महाराज! अपने राजकुमारक हेतु व्यर्थ विषाद जनु करी। ई कोनो साधारण नेना नहि थिकाह। भावी विद्याधरक अधीश्वर एहि नेनाक रूप मे अहाँक गृह उत्पन्न भेलाह अछि। एहि प्रसंग केँ अपन विद्याक प्रभाव सँऽ विद्याधरक राजा बूझि क्षुब्ध छथि। अतएव भगवान शंकर अपन स्तम्भक नामक गणक सरदार केँ हिनक रक्षार्थ नियुक्त कएने छथि जे परोक्ष रूप सँऽ राजकुमारक सतत् रक्षा करैत छथिन्ह। हम नारदक मुँह सँऽ एहि तरहक संवाद सुनलहुँ अछि।"

जावत मन्त्री यौगन्धरायण वत्सराज सँऽ एहितरहक वार्त्तालाप करैत छलाह तावतहिँ नभोमण्डल सँऽ चारू दिशा केँ अपन अद्भुत् कान्ति सँऽ द्योतित एवं सभक नेत्र केँ विस्मित करैत किरीट श्रो कुण्डल सँऽ विभूषित खड्ग ग्रहण कएने एक गोट दिव्य पुरुष उतरलाह। वत्सराज हुनक समुचित आतिथ्य सत्कार कए उत्सुकतापूर्वक पुछलथिन्ह जे "हे महाभाग! अहाँ के थिकहुँ तथा कोन कार्यक निमित्त अहाँक पदार्पण हमरा गृह भेल अछि?"

वत्सराजक उत्सुकता पर ओ दिव्य पुरुष प्रश्नोत्तर दैत बजलाह जे "हे राजन्! हमर जन्म यद्यपि मानव रूप मे भेल तथापि हम शक्तिवेग नाम सँऽ विद्याधरक स्वामी बनि गेलहुँ। हम अपन विद्याक प्रभाव सँऽ जानि जे हमरा लोकनिक भावी अधीश्वर

अर्हांक पुत्र रूप मे उत्पन्न भेलाह अछि हुनक दर्शनार्थ एतए अएलहुँ अछि।" एवंकमेँ वत्सराज सँऽ निवेदन कए ओ दिव्य पुरुष राजकुमारक दर्शन कए पुलकित भेलाह।

तदुपरान्त वत्सराज आतुरतापूर्वक शक्तिवेग सँऽ पुछलथिन्ह जे "हे मित्र! विद्याधरत्व कोना प्राप्त कएल जाइछ, ई केहेन होइछ तथा अहाँ ओकरा कोना प्राप्त कएलहुँ से सभ वृत्तान्त हमरा कहू।"

वत्सराजक उत्कण्ठा केँ जानि शक्तिवेग विनयपूर्वक हुनका सँऽ कहलथिन्ह—"हे राजन्! एहि जन्म मे वा अग्रिम जन्म मे धीरवान पुरुष शिवक अर्चना कए हुनक प्रसादात् विद्याधर पद केँ प्राप्त करैत अछि। विद्याधर पद अनेक प्रकारक होइत छैक जे विद्या, खड्ग एवं माला आदि सिद्धिक द्वारा प्राप्त कएल जाइछ। हम एहि पद केँ कोना प्राप्त कएल से निवेदन करैत छी।"

एहि क्रमेँ शक्तिवेग महारानी वासवदत्ताक समक्षहिँ वत्सराज उदयन सँऽ अपन कथा कहब प्रारम्भ कएलैन्ह—

कनकपुरी ओ शक्तिदेवक कथा

"प्राचीन काल मे वर्द्धमान नामक जे नगर छल ओ वस्तुतः भूतलक भूषण छल। ओहि नगर मे परोपकारी नामक अपूर्व वीर्यवान एक राजा छलाह। एहि राजा कें कनकप्रभा नामक साक्षात् लक्ष्मीसन स्वरूपवती एवं विद्युत् सन चञ्चला रहितहुँ मेघसन गंभीर रानी रहथिन्ह। राजा कें कनकप्रभाक गर्भ सँऽ एक कन्या जन्म लेलथिन्ह जे देखबा मे सर्वाङ्ग सुन्दरि छलीह। राजा एहि कन्याक नाम कनकरेखा रखलथिन्ह।

कनकरेखा शुक्लपक्षक चन्द्रमा सदृश निरन्तर बढ़ए लगलीह तथा अल्पकालहि मे युवती भए पिताक चिताक कारण भए गेलीह। राजा ओकर तारुण्य विकाशक संग अनुपम रूपराशि कें देखि कनकप्रभा सँऽ कहलथिन्ह जे "हे रानी! बिना रागक गीतसन कुमारि कन्या लोक कें कटु लगैछ। अतएव विवेकी पुरुष यौवन मे पदार्पण करितहिं कन्या कें उपयुक्त वरक अन्वेषण कए ओकर हाथ मे सौंपि दैत अछि जे यश एवं धर्म दुहू दृष्टिकोणे उत्कृष्ट होइछ।"

राजाक स्नेह सँऽ द्रवीभूत एवं चिन्ता सँऽ कातर वचन कें सुनि रानी कनकप्रभा विनयपूर्वक बजलीह—"हे नाथ! अहाँ तँऽ कनकरेखाक विवाहक हेतु उद्विग्न छी आ ओम्हर तँऽ ओ विवाह करबाक पक्षे मे नहि अछि। तखन व्यर्थक विषाद अहाँ किएक करैत छी!"

कनकप्रभाक एहि तरहक वचन सुनि राजाक उद्वेग आगि मे घी पड़लासन बढ़ल। ओ तत्क्षण कनकरेखाक भवन जाए स्नेहपूर्णवाणी मे अपन पुत्री संऽ बजलाह—"हे पुत्री! अपन अनुरूप पति प्राप्तिक मनोरथ स्त्रीमात्र मे पाओल जाइछ। अतएव देवता, दानव ओ मनुष्य समहक कन्या पतिक कामना सँऽ भगवानक अर्चना करैछ तथा मनोवाञ्छित पति प्राप्तिक याचना करैछ। तखन एहि भावनाक प्रतिकूल भए अहाँ किएक मना करैत छिऐक!"

पिताक कातर एवं स्नेहयुक्त बचन कें सुनि कनकरेखा लज्जावशात् पृथ्वी पर अपन दृष्टि राखि अत्यन्त संकोचपूर्वक बजलीह—"पिताजी! कन्याजीवन की विवाहोपरान्त पतिक चिन्तनाक हेतु भेल अछि? स्वेच्छा सँऽ कुमारि रहि माता-पिताक सेवा कन्या कें की उपलब्ध नहि भए सकैछ!"

कनकरेखाक युक्तिपूर्ण उक्ति सुनि राजा पुनि ओकरा कहलथिन्ह—"हे पुत्री! वस्तुतः कन्याक जन्महि दोसराक हेतु होइछ। बाल्यावस्थाक अनन्तर पतिक

बिना कन्याक जीवन पिताक गृह मे निरर्थक होइछ। कन्या कें ओतए ऋतुमती भेला सँ ओकर बन्धु-बाँधव अधोगति कें प्राप्त करैछ तथा ओ कन्या शूद्रा और ओकर पति शूद्र कहबैछ।"

पिताक सद्भावना सँ प्रेरित एवं नीतियुक्त बचन सुनि कनकरेखा प्रसन्न पिता सँ अनुनय करैत पुनि बजलीह—"पिताजी जँ एहि तरहक आचरण होइछ तऽ अहाँ हमरा ओही पुरुष कें कन्यादान कए दिऔन्ह जे कनकपुरी नामक नगरी देखने होथि।"

कनकरेखाक स्वीकृति जानि राजा विचारलैन्ह जे "हो ने हो कोनो कारणे हमर गृह एहि देवीक प्रादुर्भाव भेल अछि अन्यथा एतेक थोड़ अवस्था मे एहि तरहक प्रसंग सँ ई कोना अवगत भए सकैत अछि! अतः कनकरेखाक अभिप्रायक पूर्तिक उद्देश्य सँ राजदरबार मे पदार्पण करितहिं राजा दरबारी लोकनि सँ आग्रह-पूर्वक पुछलथिन्ह—"किओ व्यक्ति अहाँ लोकनिक मध्य ऐहन छथि जे कनकपुरी नामक नगर देखने होथि?"

राजाक प्रश्न सुनि अप्रतिभ भए दरबारी-लोकनि एक दोसराक मुँह तकैत बजलाह—"महाराज! ओहि नगर कें देखबाक कोन कथा हमरा लोकनि सँ ओकर नामो धरि नहि सुनलिऐक अछि।" तत्पश्चात् राजा प्रतिहारी कें बजाए आज्ञा प्रसारित कएलैन्ह "जे व्यक्ति कनकपुरी नामक नगर देखने छथि राजा हुनका अपन कन्याक संग विवाह तथा युवराज-पद प्रदान करथिन्ह।"

समग्र नगर मध्य व्यापक रूप मे एहि प्रकारक घोषणा कएल गेल मुदा किओ व्यक्ति एहेन नहि भेटलथिन्ह जे कनकपुरी देखने छलाह। एहि अभ्यन्तर नगरक एक गोट नागरिक बलदेवक पुत्र शक्तिदेव जे जुआ मे अपन समस्त सर्वस्व हारि अपन शरीर त्यागबाक हेतु उद्विग्न भए गेल छलाह राजाक घोषणा सुनि पुलकित भए चिन्तना करए लगलाह तथा अन्त मे निश्चय कएलैन्ह जे भाग्यक परीक्षार्थ उद्योग करब पुरुषार्थीक कर्त्तव्य होइछ। अतएव ओ राजपुरुषक सम्मुख आए निवेदन कएलैन्ह जे "हम कनकपुरी देखने छी।"

राजकर्मचारी शक्तिदेव कें राजाक समक्ष उपस्थित कएलथिन्ह तथा राजा हुनकर सत्यताक जाँचक हेतु हुनका कनकरेखाक ओतए पठौलथिन्ह।

कनकरेखा शक्तिदेव सँ पुछलथिन्ह "वस्तुतः अहाँ कनकपुरी देखने छी?" शक्तिदेव उत्तर देलथिन्ह जे—"यथार्थतः हम विद्यार्थी अवस्था मे ओहि नगरी गेल रही।" तदुपरान्त ओ फेर पुछलथिन्ह जे "अहाँ कोना ओतए गेलहुँ तथा ओ नगर केहेन अछि?" प्रत्युत्तर दैत शक्तिदेव बजलाह जे—"प्रथम हम हरपुर तत्पश्चात्

क्रमशः वाराणसी; वाराणसी सँऽ पौंड्रवर्धन तथा पौंड्रवर्धन सँऽ कनकपुरी नामक नगर गेलहुँ। कनकपुरी एक दिव्य नगर अछि जे साक्षात् लक्ष्मीक भोगभूमिसन प्रतीत होइछ। ओहि नगरक शोभाक समक्ष समस्त सौंदर्यकलाक समिश्रण एवं दीप्ति मे चन्द्रकलहुँ माँत भए जाइछ। ओतए किछु काल धरि रहि विद्यार्जन कए पुनि हम अपन जन्म भूमि प्रत्यागमन कएलहुँ।"

शक्तिदेवक कपट-कथा पर कनकरेखा विहुँसैत बजलीह—"सत्ये अहाँ ओहि नगरक दिग्दर्शन कएने छी! अहाँ पुनि कहू जे कोन मार्ग सँऽ अहाँ ओतए गेलहुँ?"

शक्तिदेव द्वारा पुनि धृष्टता कएला पर कनकरेखा अति क्रोधिता भए ओहि धूर्त कें अपन दासी द्वारा अपमानित कराए ओतए सँऽ निकलवाओल। तत्पश्चात् अपन पिताक ओतए जाय अनुनय कएल जे—"पिताजी धूर्त व्यक्ति सरल व्यक्ति कें ठकैछ। ओ धूर्त अहाँ कें ठकि हमरहु ठकए चाहैत छल जे कनकपुरी नहि देखने छल। धूर्त व्यक्तिक प्रपञ्चक प्रसंग मे शिव ओ माधव नामक दुइ धूर्तक एक कथा हम सुनबैत छी:—

शिव तथा माधव नामक धूर्त्तक कथा

"रत्नपुर नामक एक श्रेष्ठ नगर अछि। ओतए शिव तथा माधव नामक दुइ प्रख्यात धूर्त्त रहैत छलाह। ओ दुहू जखन अपन प्रपञ्च सँ समस्त नगरक लोक केँ ठकि लेल तखन अपन धन्धाक ओतए गुँजाइस नहि देखि परस्पर विनिमय कए निरूपण कएल जे ओहि नगर केँ त्यागि अपन मनोरथक पूर्त्तिक हेतु उज्जैन जाइ। उज्जैन पहुँचि राज पुरोहित शंकर स्वामीक अपरिमित धन एवं हुनक रतिसन सुन्दरि कन्या केँ अपन लक्ष्य बनाए ओ दुहू धूर्त्त अपन प्रपञ्चक जाल प्रसारित कएल।

माधव तँ ओहि नगरक बाहरक एक गाम मे जाए अपना केँ एक राजकुमारक रूप मे ज्ञातव्य कराए ओतए अपन अन्य संगीक संग रहए लागल तथा शिव ब्रह्मचारीक रूप मे शिप्राक तटक एक मंदिर मे अपन निवास बनाए ओकर चारू दिसि कुश, कमंडल, मृगचर्म इत्यादि रखबाए देल। ओ नित्य निष्ठा पूर्वक स्नान, पूजाक संग नियमित रूपक आचरणक ढोंग रचि कालयापन करए लागल। भिक्षाटन सँ जे किछु अन्न ओ ग्रहण करैत छल ओकरा तीन भाग मे विभक्त कए एक भाग तँ कौआ केँ; दोसर अतिथि केँ तथा तेसर भाग ओ स्वयं खाइत छल।

एवं क्रमेँ अपन तपश्चर्याक द्वारा ओ लोकक मोन केँ अपन दिसि आकृष्ट कए लेल। लोक ओकरा एक निष्ठि तपस्वी बूझि भक्तिपूर्वक सत्कार करए लागल। शिवक प्रभाव एवं प्रख्याति केँ जानि माधव एक समय कपटी राजकुमारक भेष मे ओतए आएल तथा शिवक चरण पर अत्यन्त भक्तिपूर्वक खसि प्रणाम कए उपस्थित लोक सँ कहब प्रारम्भ कएल जे "एहि युग मे एहेन किओ दोसर तपस्वी नहि छथि।"

दोसरा दिन माधव अपन एक मित्र केँ एक जोड़ धोती तथा एक डोपटा दए कहल जे "तूँ शंकर स्वामीक ओतए जाए हुनका सँ कहुन जे माधव नामक दक्षिण देशक एक राजकुमार अपन बन्धु-बाँधव सँ त्रसित भए अन्य राजपुत्रक संग अपरिमित धनक संग ओतए अएलाह अछि। ओ अहाँक दर्शनाभिलाषी भए हमरा एतए पठौलैन्ह तथा एहि वस्तु केँ उपहार स्वरूप अहाँ केँ भेंट कएलैन्ह अछि।"

माधव द्वारा प्रेषित ओ दूत शंकरस्वामी कें माधवक वार्ता कें सुनौलक। लोभक वशीभूत भए राज पुरोहित ओकर कथा हर्षित भए स्वीकार कएलथिन्ह।

दोसरा दिन माधव अवसर पाबि स्वतः पुरोहितक भेंटक हेतु गेलाह। पुरोहित आह्लादपूर्वक हुनका अरियाति अनलथिन्ह। तदुपरान्त ओ ओहि दिन पुरोहितक संग आलाप करैत किछु काल बितौलाक पश्चात् पुनि अपन निवास कें प्रत्यागमन कएलैन्ह।

एवंक्रमें ओ धूर्त्त पुरोहित सँऽ अपन सम्पर्क बनाए एक दिन निवेदन कएलक जे "हम अपन कुटुम्बक निर्वाहक निमित्त सेवा वृत्तिक हेतु उद्यत छी तदर्थ अपनेक अनुग्रहक अपेक्षा करैत छी। पुरोहित माधवक आचरण पर मुग्ध भए राजा सँऽ निवेदन कए हुनका राजसेवा मे नियुक्ति कराए देलथिन्ह।

माधवक आचरण एवं कार्यदक्षता कें देखि पुरोहित हर्ष सँऽ उत्फुल्ल भए गेलाह तथा ओ माधव सँऽ आग्रह कएलथिन्ह जे "अहाँ हमरहिँ गृह निवास करू।"

पुरोहितक एहि तरहक अनुग्रह कें ओ धूर्त्त संकल्प सिद्धिक प्रथम सोपान बुझल तथा अपन अभिप्रायक कार्यान्वितक हेतु नकली माणिकक आभूषणक निर्माण कराए एवं ओहि आभूषण कें एक पेटी मध्य बंद कए अपन मित्र वर्गक संग पुरोहितक गृह कें प्रस्थान कएलक। ओतए पहुँचि ओ धूर्त्त ओहि पेटी कें पुरोहितक खजाना में रखबाए देल।

प्रारम्भ मे तँऽ ओ धूर्त्त पुरोहितक गृह मे बड़ आनन्द सँऽ रहैत छल किन्तु किछु कालक उपरान्त अपन प्रपञ्चक जाल पसारब प्रारम्भ कएल। ओ अकस्मात् अपन भोजनक मात्रा मे कटौती कए अपन शरीर कें दुर्बल बना देल। पुरोहित दिनानुदिन ओकर स्वास्थ्यक पतन सँऽ खिन्न रहए लगलाह।

एवंक्रमें ओ एक दिन पुरोहित सँऽ आतर स्वर मे कहलक जे "हे विप्र! अहाँ हमर स्वास्थ्य सँऽ अवगत छी। आब हमरा जीवनक प्रत्याशा नहि अछि। अतएव दान द्वारा हम एहि जन्मक पाप सँऽ मुक्ति चाहैत छी। तदर्थ अहाँ कोनो सद्पात्र कें बजबिऔन्ह जनिका हम अपन समस्त सम्पत्ति एहि लोक ओ परलोकक कल्याणार्थ दान दए सुखपूर्वक जीवनक अन्त कए सकी।"

माधवक कथनानुसार पुरोहित कतिपय ब्राह्मण कें अनलथिन्ह मुदा माधव कोनो ने कोनो कारणे ओहि ब्राह्मण कें अयोग्य बनाए वापस कए देलथिन्ह। एहि पर माधवक एक धूर्त्त मित्र पुरोहित कें परामर्श दैत बाजल जे "हे विप्रवर! शिप्राक तट पर शिव नामक एक अति निर्मिड़ ब्राह्मण रहैत छथि। ओहि ब्राह्मण

कें बजबिश्रीन्ह कदाचित श्रो पतित्र भए जाथिन्ह ।" तत्पश्चात पुरोहित शिवक श्रोतए जाए श्रनेक प्रकारें शिवक श्रनुनय-विनय करए लगलाह मुदा श्रो जखन कोनहुँ प्रकारे हुनक गृह श्रएबाक लेल उद्यत नहि भेलाह तँऽ पुरोहित पुछलथिन्ह जे "हे ब्राह्मण ! की श्रहाँ गृहस्थाश्रमक क्रम सँऽ श्रनभिज्ञ छी ? विवाहोपरान्त लँऽ लोक देवता, पितर तथा श्रतिथिक यथोचित सेवा श्रो सत्कार कए धर्म, श्रर्थ एवं काम आदि तीनू पुरुषार्थक प्राप्तिक कामना करैत श्रछि किन्तु श्रहाँ तँऽ एकर प्रतिकूल भए रहल छी ।"

एहि क्रमक नीतिपूर्ण सद्भावना एवं स्नेह सँऽ भरल पुरोहितक मधुर कथा कें सुनि तथा श्रपन इष्ट सिद्धिक उत्कट श्रभिलाषा सँऽ प्रेरित भए शिव पुरोहित सँऽ बाजल जे "हमर तँऽ विवाह भेले नहि श्रछि श्राने हम कोनो साधारण कुल मे विवाह करबाक हेतु उद्यते छी ।"

शिवक एहि कथा के सुनि पुरोहितक भावुक हृदय मे श्रानन्दक लहरि क्रमशः उठैन्ह जे हुनक चित्त कें श्रान्दोलित कए स्वतः श्रोहि मध्य भस्मीभूत भए जाइन्ह। राजकुमारक श्रपरिमित धनक लिप्सा सँऽ प्रेरित भए श्रो शिव सँऽ उत्सुकतापूर्वक कहलथिन्ह जे "हे ब्राह्मण ! जँऽ एहेन श्रहाँक उद्देश्य श्रछि तँऽ हम श्रपन श्रति स्वरूपवती कन्या विनय स्वामिनीक संग श्रहाँक विवाह कए सकैत छी जे साक्षात् विनयक प्रतिमूर्त्ति एवं लावण्यक समुद्र सँऽ निस्सृत दोसर लक्ष्मी सन स्वरूपवती छथि ।"

पुरोहितक एहि कथा कें सुनि तथा श्रपन प्रपञ्चपूर्ण योजनाक पूर्त्तिक निश्चय जानि श्रो धूर्त्त पुरोहितक कथा कें स्वीकार कएलक तथा हर्षित भए पुरोहितक गृह श्राएल। शिव कें देखितहि माधव भक्तिपूर्वक प्रणाम कएलक। पुरोहित सेहो माधवक निर्णय सँऽ पुलकित भए श्रपन कन्याक विधिपूर्वक विवाह श्रोहि धूर्त्त सँऽ कए देलथिन्ह ।

विवाहोपरान्त पुरोहित शिव कें माधवक समक्ष हुनक दान ग्रहणार्थ श्रनलथिन्ह। माधव तत्कालहिँ श्रपन रत्न सँऽ भरल पेटी मंगवाए शिव कें दान स्वरूप दए देल। शिव माधवक श्रोहि पेटी कें ग्रहणक उपरान्त पुनि पुरोहित कें सौंपि देल।

तदुपरान्त माधव महादानक प्रसादात् स्वस्थ होमए लागल तथा शिवक श्रनुग्रहक ऋणी भए श्रोकर संग प्रत्यक्ष रूप सँऽ श्रपन मैत्री स्थापित कएलक। तत्पश्चात् दुहू मिलि मंत्रना करैत पुरोहितक गृह सुख सँऽ रहए लागल ।

एकदिन शिव श्रपन श्वसुर सँऽ कहल जे "श्राब कतेक दिन धरि हम सासुर मे भोजन करैत रहब। श्राब हम श्रपन भार स्वयं वहन करए चाहैत छी। तैं हेतु

अपने माधवक देल या तँऽ धनहिँ दए दिअ वा ओकर जे किछु मूल्य भए सकैछ सएह दए कृतार्थ करू।"

शिवक अभिप्राय केँ जानि पुरोहित ओहि नकली आभूषण केँ स्वतः राशि बदला मे हुनका अपन धन दए पृथक कए देलथिन्ह। ओहो दुहू धूर्त उत्फुल्ल भए ओहि पुरोहितक देल धन केँ आहार-विहार मे व्यय करए लागल। एहि अनन्तर पुरोहित रत्न विक्रियार्थ जौहरीक ओतए गेलाह। जौहरी ओहि रत्नक परीक्षा कए पुरोहित सँऽ कहल जे "ई के दक्ष आभूषण निर्माता थिकाह जे एहि नकली वस्तु केँ ऐहेन रूप मे निर्माण कएलन्हि अछि!"

जौहरीक वचन पुरोहित केँ तेहेन मर्माहत कएलकैन्ह जे हुनक आँखि सँऽ ओही तरहे अश्रुधारा प्रस्फुटित होमए लागल जेना समटा धैर्य हुनक हृदय सँ तिरोहित भए रहल हो। ओ सभ आभूषण लए अपन जमायक ओतए गेलाह तथा हुनका सँऽ विज्ञप्ति कएलथिन्ह जे अपन आभूषण लए हुनक धन आपस कए देथिन्ह मुदा ओ कहलथिन्ह जे "हम तँऽ सभ धन व्यय कए देल।" तदुपरान्त माधवक ओतए जाए ओहि आभूषणक प्रसंग मे कहलथिन्ह मुदा माधवक इन्कार जे "ई सभ आभूषण हमर नहि थिक। हमर तँऽ असली माणिकक छल" पुरोहितक रहल सहल धैर्य केँ नष्ट कए देल। ओ ओहि दुहू धूर्तक संग राजाक ओतए निवेदन कएलैन्ह। राजाक समक्ष जाय ओ लोकनि सभ अपन अपन वृत्तान्त पृथक पृथक कहलथिन्ह।

हुनका लोकनिक कथा सुनि राजा एवं हुनक आन आन सभासद बिहुँसैत बजलाह जे "एहि मे शिव ओ माधवक कोनो टा दोष नहि छैक। अत्यन्त लोभ सँऽ आन्हर भेला सँऽ पुरोहित केँ अपन धन गमाए उपहासक पात्र बनए पड़लैन्ह।

अतः हे पिताजी! अहाँ हमर विवाहक कोनो शीघ्रता नहि कए समयक प्रतीक्षा करू।"

कनक रेखाक अत्यन्त युक्तिपूर्ण कथा केँ सुनि राजा कहलथिन्ह जे "हे पुत्री! कन्या जनमितहिँ पिताक संताप कारक होइत अछि। कन्याक सभ गुण एवं संस्कार मिथ्या दोषारोपन सँऽ निरर्थक भए जाइछ जे चन्द्रमाक दाग सन ओकर जीवन मे भरि जन्म खटकैछ। एहि तरहक विषय यद्यपि साधारणतः मनुष्यमात्रहिँ मे पाओल जाइछ तथापि प्रथम वसातक झकोड़ विशेषतः पैघ वृक्षकेँ लगैछ। युवतीक अप्रतिम सौंदर्य ओकर स्वतन्त्रता ओ स्वच्छन्दताक बाधक सेहो होइछ। अतएव हमर प्रसन्नताक उद्देश्य सँऽ अहाँ स्वेच्छा सँऽ कुमारि नहि रहि सकैत छी। एहि प्रसंग मे हम अहाँ केँ हरस्वामी क एक गोट कथा सुनबैत छी :—

हरस्वामीक कथा

भागिरथीक तट पर कुसुमपुर नामक एक नगर अछि। ओतए हरस्वामी नामक एक निमिष्ठ तपस्वी रहैत छलाह। ओ भिक्षाटन सँ जे किछु अन्न प्राप्त करैत छलाह ओहि सँ संतोषपूर्वक अपन जीवन-यापन करथि। लोक हरस्वामी केँ आदर ओ भक्तिभाव सँ देखैत छल।

एक दिन ओ भिक्षार्थ एक ग्राम मे गेलाह। ओतए ओहि तपस्वी सँ ईर्ष्या केनिहार एक गोट दुष्ट सतत् हरस्वामीक अनिष्टक उद्योग मे रहैत छल। ओ हुनका देखितहि लोकक समक्ष बाजए लागल जे "ई तपस्वी केहेन कपटी अछि। ढोंग रचि भीख मँगैत अछि मुदा ई एहि नगरक सभ नेना केँ खाए गेल। दोसर दुष्ट ओकर उक्तिक पुष्टि करैत बाजए लागल जे "ई कथा सत्ये थिकैक। हमहुँ लोकक मुँह सँ एहि कथा केँ सुनल अछि।"

असत्य कथा बिजुली सन पसरैत अछि। ई चर्चा सेहो समस्त नगर मे प्रसारित भए गेल। नगरवासी आतंकित भए अपन-अपन नेना केँ घर सँ बाहरहुँ नहि होमए देथि जे हरस्वामी ओकरा लए खाए जाएत। अतएव नगरक ब्राह्मण एकत्रित भए गोष्ठी कए परस्पर निश्चय कएलैन्ह जे हरस्वामी केँ नगर सँ निस्काशित कए देल जाय। तदुपरान्त ओ लोकनि हरस्वामीक ओतए एक गोट दूत पठाए हुनका एहि निर्णय सँ अवगत करौलैन्ह।

हरस्वामी मिथ्या कलंकक दोष सँ क्षुब्ध एवं शोक सँ संतप्त भए अपन दोषक निवारणार्थ लोकक ओतए जाइत भरि छलाह मुदा किओ व्यक्ति हुनक समक्ष अबितहु तक नहि छल। अतएव हुनक संताप दिनानुदिन बढ़ल जाइन्ह।

एक दिन हरस्वामी ब्राह्मणक एक गोट गोष्ठी केँ देखि ओतए जाए जोड़ सँ बाजए लगलाह जे "हे ब्राह्मण लोकनि ! की अहाँक-आत्मज्ञान एहि प्रपञ्च मे अछि तथा की अहाँ लोकनि केँ विवेक ओ नेत्र दुहूक अभाव अछि ? की अहाँ लोकनि गनि नहि सकैत छी जे कतए, कतेक तथा ककर-ककर नेना केँ हम खएलहुँ !"

हरस्वामीक एहि कथा केँ सुनि ब्राह्मण लोकनि केँ ज्ञान भेलैन्ह तथा समस्त नगर मध्य नेनाक जाँच होमए लागल मुदा सभहक नेना सँ जीबितहिँ छल ! तत्पश्चात सभ एकस्वर सँ कहए लागल जे "हरस्वामी निष्कलंक छथि।" तदुपरान्त

हरस्वामी अपन मिथ्या कलंक सँ निवृत्त भए ओहि नगर कें त्यागि कतहु अन्यत्र चल गेलाह ?

अतएव हे पुत्री ! जगत मध्य मिथ्या दोषारोपन केनिहार एवं छिद्रान्वेषीक आधिक्य अछि जे एहि तरहक प्रपञ्च कए दोसराक प्रतिष्ठा पर आघात करैत अछि। तदर्थ हमर कथा मानि अहाँ अपन विवाहक स्वीकृति दए हमरा हर्षित करी।'

पिताक एहि बचन कें सुनि कनक रेखा अपन दृढ़ निश्चय कें पुष्टि करैत पुनि बजलीह जे "हे पिताजी ! हमरा एहि हेतु जोड़ जनु करी। हम ओही पुरुषक संग विवाह करब जे कनकपुरी कें देखने होथि।"

शक्तिदेवक कनकपुरीक यात्रा

एम्हर तँ कनकरेखा अपन निर्णय पर अडल छलीह आ ओम्हर हिनका द्वारा अपमानित भेल शक्तिदेव भीषण संकल्प कएलैन्ह जे "कनकरेखाक प्राप्ति हेतु आ तँ हम कनकपुरी देखब वा अपन प्राण गमाएब।" कामिनिक कटाक्षक प्रहार तँ हृदय मध्य मदनानलक ज्वाला कें धधकबैछ मुदा वाक्यरूपी प्रहार स्फूर्ति प्रदान कए प्रज्ञा कें प्रखर बनाए प्रिया मे अनुरक्त व्यक्ति कें निर्धारित मार्ग सँ पृथक कए प्रवृति कें आशापाशक दिशि लए जाइछ जाहि सँ जीवनक महान उद्देश्यक पूर्त्ति होइछ।

कनकरेखाक वाक्यक प्रहार सँ आहत शक्तिदेव तरहत्थी पर अपन जान राखि संकल्पक पूर्त्तिक हेतु वर्द्धमान नगर सँ दक्षिण दिशाक मार्गक अनुशरण कए नाना प्रकारक विपत्ति कें सहि विन्ध्य नामक महान पर्वत ओ वन-प्रान्त मे प्रविष्ट भेलाह। सिंह आदि जंगलक हिंस्र जन्तु सँ मारल जाइत मृगादिक करुण-चित्कार एवं अनेकानेक घोर डाकूक पराभव दुखक कारण ओ दिन-राति कनैत रहैत छलाह। जलक सम्पर्क सँ रहित स्वच्छन्दतापूर्वक उछलैत मरुभूमिक संतप्त किरण जे सूर्यक प्रखर तेजहु कें जितबाक उपक्रम करैत छल शक्तिदेवक धैर्य एवं उत्साह कें तोड़बाक अथक प्रयास कएलक मुदा कनकरेखाक द्वारा अपमानक स्मृति तथा ओकर प्राप्तिक आकांक्षाक समक्ष ओ स्वतः पराजित भए गेल।

एवंक्रमें निरन्तर चलैत किछु दिनक उपरान्त शक्तिदेव एक अत्यन्त रम्य स्थान मे अएलाह जतए शीतल ओ स्वच्छ जल सँ भरल एक सरोवर छल। ओहि दिव्य सरोवरक कमल स्वर्णछत्र सन तथा ओहि मध्य स्वच्छन्दता सँ मडराइत हँस आदि जलचर पराक्रमी योद्धासन प्रतीत भए रहल छल जे ओही स्वर्णछत्रक रक्षार्थ ओतए तैनात कएल गेल हो।

शक्तिदेव ओहि सरोवर मे स्नान कएलैन्ह तथा किछु काल ओतए विश्राम करलाक पश्चात् ओहि सरोवरक उत्तर सघन वृक्ष सँ भरल मुनिक एक आश्रम कें देखलथिन्ह। ओहि आश्रमक एक वट-वृक्षक नीचाँ अनेक मुनिक मध्य सूर्यतपा नामक मुनि जनिक अवस्था एक सए वर्षक छलैन्ह बैसल छलाह। शक्तिदेव मुनिक समक्ष जाए मुनि कें प्रणाम कएलथिन्ह तथा मुनिक देल एक आसन पर बैसलाह।

मुनि शक्तिदेवक आतिथ्य सत्कार कए कंद-मूल भोजनार्थ देलथिन्ह। भोजनोपरान्त मुनि स्नेहपूर्वक शक्तिदेव सँ ओतए अएबाक वृत्तान्त पुछलथिन्ह। शक्तिदेव अपन सम्पूर्ण वृत्तान्त मुनि कें सुनाए कनकपुरिक प्रसंग मे अर्चना कएलथिन्ह। शक्तिदेवक उद्देश्य बूझि मुनि कहलथिन्ह जे "एहि स्थान सँ तीन सए योजन पर काम्पिल्य नामक एक गोट नगर अछि। ओतए उत्तर नामक पर्वत पर एक आश्रम अछि। ओहि आश्रम मे हमर ज्येष्ठ भ्राता दीर्घतमा नामक ऋषि रहैत छथि। प्रायः ओ कनकपुरी नामक नगर कें जनैत होएताह।

मुनिक कथनानुसार शक्तिदेव काम्पिल्य नगर कें प्रस्थान कएल। विस्तीर्ण अरण्यक दुर्गम स्थान मे कतेको दिनक यात्राक उपरान्त ओ काम्पिल्य नगर मे प्रविष्ट भेलाह तथा उत्तर पर्वत पर चढ़ि आश्रमक दीर्घतमा मुनि कें प्रणाम कएलथिन्ह।

मुनि शक्तिदेव कें देखि हर्ष एवं विस्मयक संग अत्यन्त दयार्द्र भए पुछलथिन्ह जे "हे महामानव! अपन बन्धु-वर्गक परित्याग कए एहि दुर्गम वनप्रान्त मे अहाँ कोन सिद्धिक लाभार्थ अएलहुँ? अहाँक स्फूर्ति एवं उत्साह सँ परितुष्ट भए हम अहाँक कोन कल्याण कए सकैत छी?"

मुनिक अमृतरूपी वाणी शक्तिदेवक संताप कें हरि हुनका आनन्द सँ ओत-प्रोत कएदेल। ओ मुनि सँ सभ वृत्तान्त कहि कनकपुरीक प्रसंग मे पूछि अपन उद्देश्य पूर्त्तिकहेतु हुनक आशीषक याचना कएलैन्ह।

शक्तिदेवक वृत्तान्त सुनि मुनि कहलथिन्ह जे "हे महाभाग! यद्यपि कार्य सँ अहाँक-बढ़ उत्कट अछि मुदा अहाँक असाधारण लगन ओ उत्साहक प्रसादात् सफलता अनुरूप होएत। दूर-दूर देश सँ आएल अनेको व्यक्ति एवं नगर सँ हमरा परिचय प्राप्त भेल मुदा ककरहु मुहेँ एहि नगरीक नामोपरि नहि सुनलिऐक। तथापि हम अहाँक कल्याणार्थ परामर्श दैत छी।

समुद्र मध्य उत्स्थल नामक एक द्वीप अछि। ओहि द्वीप मे सत्यव्रत नामक एक धनी निषादराज रहैत छथि। ओ प्रायः प्रत्येक द्वीप मे जाइत अबैत छथि। सम्भव थिक जे ओ एहि नगरी कें जनैत होइथ। अतएव अहाँ एहिठाम सँ

समुद्र-स्थित विटंकपुर नामक नगर मे जाऊ। विटंकपुर सँऽ कोनो व्यापारिक नाव सँऽ ओहि निषादराजक ओतए अपन ईष्ट-सिद्धिक हेतु जाएब।"

शक्तिदेव मुनिक आश्रम सँऽ प्रस्थान कए विटंकपुर अएलाह। ओतए ओ समुद्रदत्त नामक एक व्यापारिकक नाव पकड़ि उत्स्थल द्वीप कें प्रस्थान कएल।

नाव समुद्रक अपार जल राशि मध्य जाए रहल छल। समुद्रक पर्वताकार लहरि ओहि नाव कें धनक उत्थान ओ पतन सदृश ऊपर-नीचाँ लए जाए जीवन ओ मृत्युक बीच महज प्रदेश मात्रक बोध कराए मनुष्य जीवनक नश्वरताक ज्ञान करबैत छल। भावी अनिष्टक सम्भावना सँऽ शक्तिदेवक मोन सन्ताप सँऽ पीड़ित भए जीवनक अंतिम समयक प्रतीक्षा करैत छल जे यर्थाथतः उपस्थित भए गेल।

अपन स्तित्वक हेतु प्रबल समुद्रक लहरि सँऽ लड़ैत ओ नाव अन्त मे उत्साह रहित भए डूबि गेल। समुद्रदत्त तँऽ काठक एक तख्ताक अवलम्ब प्राप्त भेला सँऽ अपन प्राण बचौलक मुदा शक्तिदेव कें एक पैघ माँछ खाए गेल।

शक्तिदेव कें गीरि ओ माँछ स्वेच्छा सँऽ समुद्र मध्य घूमैत दैववशात् उत्स्थल द्वीप मे आएल तथा सत्यव्रतक मल्लाह द्वारा ओ पकड़ल गेल।

ओहि अत्यन्त विशाल माँछक दर्शनार्थ अनेको व्यक्ति कें ओतए देखि तथा विविध प्रकारक ओकरा सम्बन्ध मे चर्चा सुनि सत्यव्रत कें कौतुहल भेलैन्ह तदर्थ ओकरा ओ चीरबौलैन्ह आदि सँऽ जीबैत शक्तिदेव बहरएलाह।

माँछक पेट सँऽ बहराएल शक्तिदेव कें देखि सत्यव्रत कें विस्मय भेलैन्ह तथा ओ अत्यन्त नम्र भए हुनका सँऽ आग्रहपूर्वक पुछलथिन्ह जे "हे पुरुष श्रेष्ठ! अहाँ के छी तथा अहाँ एहि विशाल माँछक पेट मे कोना प्रवेश कएलहुँ इत्यादि वृत्तान्त हमरा कहू।"

माँछक विशाल पेट सँऽ बहरएला सँऽ शक्तिदेव नरक सँऽ प्रत्यागमन तथा उत्स्थल द्वीप मे अपना कें पाबि भगवत् कृपा बुझलैन्ह। वस्तुतः ईश्वरक इच्छा सँऽ की नहि भए सकैत अछि!

शक्तिदेव अपन सभ वृत्तान्त यथावत् सत्यव्रत कें कहि सुनौलथिन्ह। सत्यव्रत शक्तिदेवक मनोरथ बूझि धैर्य दैत कहलथिन्ह "हे वीर! संताप जनु करी। पुरुषार्थीक भाग्य मे तँऽ दुखहि रहैत छैक तखन सुखक कल्पना करबे व्यर्थ थिक। धैर्यवान स्फूर्ति एवं प्रज्ञाक प्रसादात् दुखरूपी सागर कें पार कए पुनि कल्याणहुँ कें प्राप्त करैत अछि।" एहि तरहें सत्यव्रत शक्तिदेव कें आश्वासन दए हुनका ओ एक ब्राह्मण मठ मे पठौलथिन्ह जतए अतिथिक सत्कार सुलभ छल।

मठाधिपति विष्णुदत्त नामक ब्राह्मण शक्तिदेव कें पूर्ण सत्कार कएल-

थिन्ह तथा भोजनोपरान्त ओ शक्तिदेव केँ ओतए अएबाक प्रसंग एवं हुनक परिचयपात पुछलथिन्ह।

शक्तिदेवक परिचय बूझि विष्णुदत्त हर्ष सँ विह्वल भए हुनक आलिङ्गन कए कहलथिन्ह जे "हे बन्धु ! भाग्य प्रसादात् विदेश मे बन्धु-बाँधवक दर्शन होइछ। अहाँ हमर ममिऔत छी तथा हम दुहू एके नगर मध्य जन्म लए विधिक विडम्बना सँ विदेश मेँ पालित भए रहल छी। एतए अहाँ केँ पावि मरुभूमिक अमृतक झरना सन हमरा सुखक अनुभव भए रहल अछि।

शक्तिदेव भ्रातृ मिलनक एहि आनन्द केँ अपन संकल्प पूर्त्तिक प्रथम सोपान बुझलैन्ह तथा एहि समक्ष हुनक सभ कष्ट ओ संताप तिरोहित भए गेल। भाईक संग आलाप मेँ राति बितैत गेल मुदा उद्देश्य पूर्त्तिक चिन्ता सँ शक्तिदेव केँ निद्रा नहि देखि विष्णुदत्त हुनक मनोरथ पूर्त्तिक समर्थन करैत एहि प्रकारक कथा हुनका सुनावए लगलथिन्ह :—

●

कपालस्फोटक कथा

"प्राचीन काल मे यमुना नदीक तट पर एक ग्राम मे गोविन्दस्वामी नामक एक निमिष्ठ ब्राह्मण रहैत छलाह। ओहि ब्राह्मण कें अशोकदत्त एवं विजयदत्त नामक दुई गोट पुत्र रहथिन्ह।

दैववशात् ओहि ग्राम मे अनावृष्टि भेला सँऽ अकाल पड़ल। अन्न-वस्त्रक त्रुटि भेला सँऽ लोक व्याकुल भए मरए लागल। गोविन्दस्वामी कें लोकक एहि व्यथा कें नहि देखल गेलैन्ह। ओ दया सँ द्रवीभूत भए अपन स्त्री सँऽ कहलथिन्ह "हे प्रिये! लक्ष्मी कतहु स्थिर भए नहि रहलीह अछि। रूप एवं लावण्य सँऽ युक्त सुन्दर शरीरहुक अवसान भए जाइछ। चंचला लक्ष्मीक अपेक्षा कीर्त्ति-लाभ उत्तम थिक। अतएव जावत धन गृह मे अछि से सभटा लोक कें दए एहि स्थान कें छोड़ि वाराणसी चलू"।

एहि प्रकारें अपन समस्त धन कें बाँटि गोविन्दस्वामी अपन स्त्री, पुत्र एवं सेवकक संग वाराणसी कें प्रस्थान कएलैन्ह। एवंक्रमें वाराणसी पहुँचि ओ एक भगवतीक मंदिर मे निवासक हेतु आश्रय लएलैन्ह। दिन तँऽ पूजा-अर्चा मे बीतल मुदा राति ओ अपन समस्त परिवारक संग एक वृक्षक आश्रय मे बितौलैन्ह।

परोपकारी व्यक्तिक समक्ष विपत्ति शृंखलाबद्ध रहैछ। शुभ कर्म मे विघ्न तँऽ होयतहिँ अछि मुदा तें की अनिष्टक शंका सँऽ धैर्यवान विह्वल भए अपन कर्त्तव्य-पथ सँऽ हटैत अछि!

वृक्षक नीचाँ सुतल गोविन्दस्वामी कें अकस्मात् हुनक कनिष्ठ पुत्र विजयदत्त उठौलथिन्ह। ओ शीतज्वरक भीषण प्रकोप सँऽ थरथर कँपैत बाजल "हे पिताजी! हम शीतज्वर सँऽ आक्रान्त भए गेल छी। हमर कष्टक निवारणार्थ आगि जड़ेबाक उद्योग करू"।

पुत्रक एहि तरहक आर्त्त वचन कें सुनि कष्ट सँऽ व्याकुल भए गोविन्दस्वामी कहलथिन्ह "एहि निशान्त राति मे आगि कतए भेटत!" पिताक नकारात्मक उत्तर सँऽ धैर्य छोड़ैत ओ बालक कहलक "हे पिताजी! ओ की नहि देखैत छिऐक जे आगिक धधरा जड़ैत अछि? अतएव जीवनक रक्षार्थ हमरा ओतए लए चलू जाहि सँऽ हम अपन शरीर कें ओहि ताप सँऽ तप्त कए सकब।" पुत्रक एहि क्रमक आग्रह पर गोविन्दस्वामी पुनि बजलाह "हे पुत्र! ओ तँऽ श्मशान थिक जतए ओ चिता धधकैत अछि। भूत, पिशाच प्रेत इत्यादि सँऽ युक्त भयंकर श्मशान मे अहाँ

कें कोना लए आउ !" पिताक एहि तरहक उक्ति कें सुनि एवं हुनका फटकारैत ओ बालक पुनि बाजल "हे पिताजी ! हमर प्राणक अन्त भए रहल अछि और अहाँ कें भूत-प्रेतक भय होइत अछि ! की हमरा अहाँ ततेक दुर्बल बुझैत छी जे भूत, प्रेत आदिक भय सँ हम आतंकित भए जाएब ? भूत-प्रेत हमर कोन बिगाड़ कए सकैत अछि ? बिना कोनो शंकाक हमरा अहाँ ओतए शीघ्र लए चलू।"

एवंकमें कातर भावे आग्रह कएला पर तथा अन्य कोनो प्रतिकार नहि देखि गोविन्दस्वामी अपन पुत्र कें श्मशान लए गेलाह। ओतए पहुँचि ओ बालक चिताक आगि सँऽ अपन शरीर कें तप्त कए बैस रहल। एहि तरहें चिताक आगि तपैत ओ बालक अपन पिता सँऽ जिज्ञासार्थ पुछलक "हे पिताजी ! चिताक भीतर ओ गोल सन कोन वस्तु थिक।" बालकक प्रश्नक उत्तर दैत गोविन्दस्वामी कहलथिन्ह "मनुष्यक कपार जड़ैत छैक।" तत्पश्चात अकस्मात् उत्साहित भए चिता पर सँऽ एक अधजड़ल काठ कें उठाए ओ बालक ततेक जोड़ सँऽ ओहि पर प्रहार कएलक जे ओ कपार तँऽ फूटि गेल तथा ओहि मध्य सँऽ बहराएल चर्बीक धार सोझे ओकरा मुँह मे प्रवेश कएलक जकर प्रासादात् ओ बालक तत्क्षण राक्षसक रूप में परिणत भए गेल तथा तरुआरि तानि अपन पिता गोविन्दस्वामी कें मारबाक अभि-प्राय सँऽ दौड़ल। एहि अभ्यन्तर श्मशान सँ किओ बाजि उठल "हे कपालस्फोट देव अपन पिताक वध जनु करी। अहाँ एम्हर चलि आउ।"

एहि तरहक आदेश पाबि ओ बालक "कपालस्फोट" नाम प्राप्त कए अपन पिता कें ओतहि छोड़ि राक्षस बनि अन्तर्धान भए गेल तथा गोविन्दस्वामी तदुपरान्त पुत्रक नाम लए विलाप करैत ओतए सँऽ अपन निवास स्थान अएलाह।

भगवतीक मंदिर मे आबि गोविन्दस्वामी ओहि सभ वृत्तान्त कें आद्योपान्त अपन स्त्री, पुत्र आदि सँऽ कहलथिन्ह। भगवतीक दर्शनार्थ आएल अन्य यात्री लोकनि एहि घटना कें सुनि बिना मेघक वज्रपात सन हत भए गोविन्दस्वामी कें सान्त्वना देलथिन्ह। एहि अनन्तर भगवती पूजार्थ आएल समुद्रदत्त नामक एक समृद्धिशाली वैश्य गोविन्दस्वामी कें आग्रह कए सपरिवार अपन गृह अनलथिन्ह तथा ओ हुनका लोकनि कें ओतहि रहबाक निवेदन कएलथिन्ह। समुद्रदत्तक मनोरथ जानि गोविन्दस्वामी हुनक गृह रहए लगलाह।

कालक्रमें अशोकदत्त विद्या प्राप्त कए तरुण भए गेलाह। हुनका विद्या, बुद्धि, विवेक आदि गुण तँऽ छलन्हिएँ सँगहि मल्लविद्या मे ओ सेहो पूर्ण निपुण भए प्रख्यात् पहलवान भए गेलाह। एक समय दक्षिण देशक एक विख्यात पहलवान वाराणसी अएलाह तथा काशीराज प्रतापमुकुटक समस्त पहलवान कें हुनक समक्षहिं मे परास्त कए देल। तत्पश्चात् ओहि वैश्य सँऽ जनिका गृह गोविन्दस्वामी रहैत

छलाह राजा अशोकदत्तक मल्लविद्या मे ख्याति सुनि हुनका बजाए कुस्ती लड़बाक आदेश देलथिन्ह।

राजाक आदेश पाबि आखाड़ा मे उतरि अशोकदत्त ओहि पहलवान कें क्षणमात्रहिं मे पटकि देल। उपस्थित दर्शनार्थी अशोकदत्तक पराक्रम एवं प्रज्ञाक प्रशंसा करए लागल तथा धन्यवाद दए हुनक अभिनंदन कएलक। काशीराज प्रताप-मुकुट अशोकदत्त कें प्रचुर धन देलथिन्ह तथा हुनक पराक्रम सँऽ प्रसन्न भए हुनका ओ अपन अंगरक्षक नियुक्त कए लेलथिन्ह।

काशीराजक सेवा मे रहि अशोकदत्त अपन कार्य-निपुणता, कौशल एवं पराक्रमक प्रसादात् राजाक प्रियपात्र बनि गेलाह तथा राजा अशोकदत्त कें हृदय सँऽ मानए लगलथिन्ह। अशोकदत्तहुँ कें राजाक प्रति हार्दिक भक्ति छलैन्ह तथा राजाक आदेश पालनार्थ ओ अपन प्राणो तक उत्सर्ग करबाक सतत् उद्यत् रहैत छलाह।

एहि तरहक व्यक्ति कें जीवन मे अनेको कष्ट अबैछ तथा जँऽ ओ ओहि कष्टक समक्ष प्रज्ञा एवं धैर्य कें नहि छोड़ैछ तँऽ सिद्धि कें प्राप्त कए सभ सुखक उपभोग करैत अछि अन्यथा ओकर जीवन नष्ट भए जाइत छैक।

अशोकदत्तहुँ कें एहि तरहक अवसर आएल। एक चतुर्दशी कें काशीराज शिवपूजनार्थ नगर सँऽ कतहुँ बाहर गेल छलाह। पूजाक उपरान्त जखन ओ श्मशान होइत नगर अबैत छलाह कि अकस्मात् एक गोटे हुनका सम्बोधन कए कहए लागल "हे राजन्! हमरा दंडाधिकारी बिना अपराधक दंड दए शूली पर चढ़बाए देलैन्ह। फलस्वरूप हमर प्राण नहि जाइत अछि। आइ एहि तरहें हमर तेसर दिन थिक। हम प्यासल छी। जल दए हमर तृष्णाक अन्त करू।"

एहि तरहक वचन कें सुनि दया सँऽ द्रवीभूत भए अशोकदत्त कें ओहि प्यासल व्यक्ति कें जल देबाक आदेश दए राजा अपने तँऽ नगर कें गेलाह मुदा अशोकदत्त जल लए श्मशान कें प्रस्थान कएलैन्ह। ओ चिताक प्रकाश, नरमांसक टुकड़ीक हेतु परस्पर शृंगालक कोलाहल तथा वैतालिकक नृत्यक झंकारक शब्द आदि द्वारा अंधकार मे अलक्षित मार्गक अनुसरण करैत कालरात्रिक निवास भवन सन श्मशान मे प्रवेश कएलैन्ह। ओतए पहुँचि ओ जोड़ सँऽ कहलथिन्ह "राजा सँऽ के जल मँगने छलहुँ?" एहि पर एक दिशि सँऽ उत्तर आएल जे "हम मँगने छलिऐन्ह।"

ओतए गेला पर अशोकदत्त एक चिता मे आगि तथा ओहि मध्य शूली सँऽ बेधल एक पुरुष कें देखलथिन्ह। शूलीक नीचाँ सुन्दर अलंकार सँऽ अलंकृत एक गोट कनैत स्त्री कें ओ सेहो देखलथिन्ह जे शुक्लपक्षक चन्द्रमाक पूर्ण कलासन अपन सौन्दर्यक दीप्ति सँऽ श्मशान कें प्रकाशित करैत छलीह।

अशोकदत्त ओहि स्त्री मे रूप एवं लावण्यक समस्त कला कें एकस्थ एकत्रित पाबि अत्यन्त विस्मित भए ओकर समक्ष जाए जिज्ञासार्थ पुछलथिन्ह "हे माता! अहाँ के छी? तथा एहि ठामें क्रन्दन करैत एतए किएक बैसलि छी?"

अशोकदत्तक एहि प्रकारक जिज्ञासापूर्ण प्रश्नक उत्तए दैत ओ स्त्री बजलीह "हे वीर! हम अपन प्रारब्ध पर कनैत छी। एहि शूली पर चढ़निहार पुरुषक हम अर्द्धांगिनी थिकहुँ। हम हिनक संग सतीक लाभार्थ हिनक प्राणान्तक प्रतीक्षा मे तीन दिन सँऽ एतए बैसल छी। ई वारम्वार पानि मँगैत छथि मुदा हम ऊँच शूली पर लटकल हुनक मुँह धरि नहि पहुँचि पबैत छी।"

अशोकदत्त शोक सँऽ अभिभूत तथा मुख-चन्द्रक प्रतिभा सँऽ श्मशानक अंधकार कें प्रतिबिम्बित केनिहारि ओहि सुन्दरीक कातर वचन कें सुनि ओकरा धैर्य दैत कहलथिन्ह—"हे सुन्दरि! जगतक कोनहुँ टा वस्तु स्थाई नहि थिक। सुन्दर रूप, तरुण शरीर, धन-सम्पत्ति आदि सभक अन्त होइछ तथन समागम आ वियोग तँऽ संसारक रीतिए थिकैक। अतएव व्यर्थक विषाद कएला सँऽ की लाभ भए सकैछ? राजा ओहि पुरुषक निमित्त हमरा द्वारा जल पठौलथिन्ह अछि। अहाँ हमर पीठ पर अपन पाएर राखि हुनक मुँह मे एहि जल कें दए दिऔन्ह। आपत्ति काल मे आन पुरुषक स्पर्श स्त्रीक हेतु आपत्ति-जनक नहि होइछ।"

एहि तरहक कथा सुनि तथा अशोकदत्तक बात मानि ओ स्त्री जल लए, शूलीपर चढ़ल ओहि पुरुष कें जल देबाक हेतु अशोकदत्तक पीठ पर तँऽ चढ़ि गेलीह मुदा ओ किछु कालक उपरान्त अपन पीठ पर रक्तक बुँद खसला सँऽ शंकित भए मुँह उठाए देखलथिन्ह जे ओ स्त्री शूली पर चढ़ल ओहि पुरुषक माँस कटार सँऽ काटि खाइत छलीह।

ओहि स्त्रीक एहि तरहक आकृति कें देखि अशोकदत्त ओकरा खसेबाक हेतु ओकर पाएर पकड़लैन्ह मुदा पाएर छोड़ाए अपन मायाक प्रभाव सँ ओ अलक्षिता भए गेलीह तथा ओकर एक पाएरक पयजेब अशोकदत्तक हाथहि मे रहि गेल जकर दीप्ति चन्द्रमाक आभा सन तथा निर्माण कला तेहेन विलक्षण बूझि पड़ैत छल जे विधाता दोसर चन्द्रमहिक सृष्टि कएने होथि।

ओहि दिव्य पयजेब कें लए अशोकदत्त हर्ष एवं विस्मयक संग अपन गृह अएलाह। दोसरा दिन पयजेब लए राजाक सम्मुख जाय निवेदन कएलथिन्ह तथा आदर पूर्वक ओहि दिव्य पयजेब कें राजाक समक्ष प्रस्तुत कएलैन्ह।

काशीराज ओहि दिव्य आभूषण कें देखि कौतूहल पूर्वक पुछलथिन्ह "ई दिव्य आभूषण कतए सँऽ अनलहुँ?" राजाक आश्चर्यक निवारण करैत अशोकदत्त उत्तर दैत ओहि रातुक यथावत् वृत्तान्त कें हुनका सँऽ कहलथिन्ह। राजा ओहि

अद्भुत कथा कें सुनि तथा अशोकदत्तक असाधारण मनोबल कें बूझि अत्यन्त प्रसन्न भए ओहि दिव्य आभूषण कें लए रनिवास अएलाह तथा महारानी कें ओ आभूषण दए ओहि रातुक सभ वृत्तान्त सँ हुनका अवगत करौलथिन्ह ।

महारानी अशोकदत्तक ओहि कथा कें जानि हुनक वर्ण, रूप एवं अन्य गुणक प्रसंग मे राजा सँ पुछलथिन्ह तथा राजा द्वारा हुनक श्रेष्ठ वर्ण, उत्तम गुण तथा सुन्दर स्वरूप आदि कें जानि ओ विनयपूर्वक बजलीह "हे नाथ ! लक्ष्मी चञ्चला भेला सन्ता क्षणमात्रहिँ में नष्ट भए जाइछ । अतः धनक अपेक्षा एहि तरहक गुण सर्वोपरि थिक । अतएव अशोकदत्त कें रूप ओ गुण मे मदनलेखाक अनुरूप देखि हमर तँ मनोरथ अछि जे मदनलेखाक पाणिग्रहण अशोकदत्तक संग जँ भए जाइत तँ उत्तम होइत ।

मदनलेखा अशोकदत्त कें मधु-उद्यान मे देखि हुनका पर पूर्वहिँ आसक्त भए गेलीह अछि । एहि प्रसंग मे हम ओकर सखी सँ बूझि चिन्तित भए सुतला पर निन्द मे एक अपूर्व स्वप्न देखल जे एक दिव्य स्त्री समक्ष उपस्थित भए कहलैन्ह जे "हे पुत्री ! एहि मदनलेखा कें केनो आन पुरुष कें नहि दए अशोकदत्त कें देबैन्ह । ई हुनक पूर्व जन्मक अर्जित पत्नी थिकीह" ।

महारानीक उत्कट अभिलाषा कें जानि कन्याक प्रति स्नेह, अपन मनक मनोरथ एवं वैभवक अनुसार विवाहक ओरिआओन होमए लागल तथा अपूर्व समा-रोहपूर्वक लक्ष्मी एवं विनयक समागम सन मदनलेखा एवं अशोकदत्तक समागम भेल ।

एवंकमें दिन बितैत गेल । एक समय महारानी ओहि दिव्य पयजेबक सौंदर्य एवं अपूर्व निर्माण कला कें देखि सुलभ नारी स्वभावात् काशीराज सँ ओकर जोड़ा बनेबाक अनुरोध कएलथिन्ह । काशीराज महारानीक तुष्टिक हेतु नीक-नीक सोनार कें बजाए ओहि पयजेबक जोड़ा बनेबाक आदेश देलथिन्ह ।

पयजेबक निरीक्षण कए सोनार अपन असमर्थता कें प्रकट करैत राजा सँ निवेदन करैत बाजल जे "हे महाराज ! एहि पयजेबक निर्माण मानवक द्वारा नहि भए देवताक द्वारा भेल अछि । अतएव ओकर जोड़ा ओतहि उपलब्ध भए सकैछ जतए सँ ओ प्राप्त भेल अछि ।

मनोरथक पूर्ति नहि भेला सँ चित्त मे विषादक प्रादुर्भाव प्रायः होइतहिँ छैक । सोनारक असमर्थता कें जानि राजा एवं रानी दुहू कें खिन्न देखि अशोक-दत्त सहसा आवेश मे आबि बजलाह—"हे राजन् ! चिन्ता जनु करी । उद्योग कएला सँ कोन कार्यक पूर्ति नहि भए सकैछ ? हम ओहि पयजेबक जोड़ा कें आनि सकैत छी ।"

अशोकदत्त एहि प्रकारें राजा सँ कहि ओहि श्मशान कें प्रस्थान कएलैन्ह तथा कृष्णपक्षक चतुर्दशीक राति मे जतए ओ ओहि आभूषण कें प्राप्त कएने छलाह ओतहि पुनि पहुँचलाह।

श्मशान गेलाक उपरान्त अशोकदत्त एक मृतकक शरीर कें अपन कान्ह पर राखि श्मशान मध्य घूमए लगलाह। ओ ओतए घूमैत जोड़-जोड़ सँ चिकरैत छलाह जे "हम मनुष्यक माँस बेचैत छी। जनिका लेबाक इच्छा हो से लिअ।"

अशोकदत्तक एहि तरहक वचन कें सुनि एक स्त्री हुनक समक्ष आबि बजलीह "हे महाभाग! अहाँ हमरा संग आउ। एहि तरहें ओहि स्त्रीक आग्रह कएला पर अशोकदत्त ओकर संग प्रस्थान कएलाह तथा किछु दूर गेलाक उपरान्त अशोकदत्त समीपक एक वृक्षक नीचाँ रत्नक अलंकार सँ अलंकृत एवं दिव्य रूप सँ सम्पूर्ण श्मशानक भूमि कें पूर्ण चन्द्र सन दीप्तिमान करैत कतिपय स्त्रीक मध्य एक आसन पर बैसलि एक नितान्त स्वरूपवती स्त्री कें देखलथिन्ह।

अशोकदत्त मरुभूमिक कमल सन ओतए ओहि रमणी कें पाबि विस्मित भए ओकर समक्ष जाए बजलाह जे "हम मनुष्यक माँस बेचैत छी जँऽ लेबाक अछि तँऽ लए लिअ। तदुपरान्त ओ दिव्य स्त्री अत्यन्त आदरपूर्वक स्नेहयुक्त वाणी मे बजलीह "हे महापुरुष! एहि माँसक की मूल्य अछि?" प्रश्नक उत्तर दैत अशोकदत्त ओहि पयजेब कें देखबैत बजलाह "जे एहि पयजेबक जोड़ा लगाओत ओकरे ई माँस देबैक।"

एहि कथा कें सुनि ओ स्त्री बजलीह "हे श्रेष्ठ पुरुष! अहाँ हमरा नहि चिन्ह सकलहुँ। हम ओएह स्त्री छी जकरा अहाँ ओहि दिन शूली पर लटकल मनुष्यक समीप देखने छलिऐक। ई हमरे पयजेब थिक। एकर जोड़ा हमरा अछिये। जँऽ अहाँ एहि हेतु उत्सुक छी तँऽ हमर कहल करू। हम पयजेब अहाँ कें दए देब।"

ओहि स्त्रीक वचन सुनि अशोकदत्त ओकर कथा कें स्वीकार करैत संकल्प कएलैन्ह जे 'अहाँक वचनक पूर्ति करब।" तत्पश्चात् ओ दिव्य स्त्री कहए लगलीहः—

"हिमालयक शिखर पर त्रिघंट नामक एक नगर अछि। ओहि नगर मे लम्भजिह्व नामक एक राक्षसराज रहैत छलाह। हम हुनक विद्युज्जिह्वा नामक धर्मपत्नी थिकहुँ। हम स्वेच्छानुसार रूप धारण कए सकैत छी। एक कन्याक जन्मक उपरान्त हमर पति तँऽ कपालस्फोट नामक राक्षसराज द्वारा मारल गेलाह मुदा ओ पुनि प्रसन्न भए हमर नगर हमरा दए देलैन्ह जतए हम अपन कन्याक संग आनन्द-पूर्वक रहैत छी।

कालक्रमें हमर कन्या शैशवावस्था कें पार कए यौवनावस्था मे पदार्पण कएलीह। ओकर ज्योत्स्ना सन स्वच्छ वर्ण, नीलकमल सन विशाल नेत्र, अनुपम शील, अलौकिक नम्रता तथा अर्थगर्भित नीति कें देखि ओकर अनुरूप वरक हेतु हम उद्विग्न भए गेल रही। एक तँ पिताक अभाव दोसर कन्याक जीवन तखन के माय भए सकैछ जकरा अपन कन्याक सुखक अभिलाषा नहि होइछ ? किन्तु ई सभ तँ अपन प्रयासे नहि होइत छैक। विशेषतः विद्या, धन एवं समागम तँ पूर्व जन्मक संस्कारक प्रसादात् उपलब्ध होइछ। अतएव हम अपन कन्याक अदृष्ट ईश्वरेच्छा पर छोड़ि देल।

भाग्यवशात् ओहि चतुर्दशीक रात्रि मे राजाक संग जाइत अहाँ कें अपूर्व सुन्दर पराक्रमी एवं उत्कृष्ट जानि अपन कन्याक हेतु उपयुक्त वर बूझि महत्व मनोरथक पूर्त्तिक हेतु हम अहाँ कें भ्रम मे राखि अपन माया द्वारा प्रपञ्च सँ ठकल तथा पुनि अहाँक आकर्षणक हेतु अपन एक पयजेब कें छोड़ि हम अलक्षिता भए गेलहुँ। हम अहाँक आगमन एवं वचन सँ बड़ प्रसन्न भेलहुँ तथा आब अहाँ हमर कन्याक संग विवाह कए ओकर उपभोग करू जे सभ तरहें अहाँक अनुरूप अछि। हम अपन दोसरहुँ पयजेब तँ देबे करब संगहि अहाँक कल्याणार्थ हम सतत् प्रयत्न करब जाहि मे हमरहुँ सुख सन्निहित अछि।"

राक्षसीक एहि कथा कें मानि अशोकदत्त स्वयं एवं सुन्दरीक लाभार्थ ओकरहिं सिद्धिक प्रभाव सँ आकाश मार्ग द्वारा ओकर नगर कें गेलाह। ओ नगर अशोकदत्त कें स्थिर सूर्यक बिम्ब सन तथा राक्षसराजक पुत्री विद्युत्प्रभा साहसक साक्षात् सिद्धिसन प्रतीत भेलैन्ह। अशोकदत्त परिपूर्ण सौंदर्य सँ सम्पन्न एवं समस्त मधुरिमाक आगार विद्युत्प्रभा कें आँजन सन नेत्ररंजक तथा विकसित कमलक मालासन गरदनिक एकमात्र शोभा बूझि आनन्दविभोर भए थोड़ेक कालक हेतु स्वतः अपनहुँ कें बिसरि गेलाह।

एवंक्रमें दिन बितैत गेल तथा अशोकदत्त कें अपन संकल्पक स्मृति भेलैन्ह। अतएव एक दिन राक्षसी सँ ओ पयजेबक आग्रह कएलथिन्ह। जमाएक आग्रह पर ओ राक्षसी अशोकदत्त कें पयजेबक संग एक स्वर्णकमल सेहो देलथिन्ह तथा अपन सिद्धिक द्वारा आकाश मार्ग सँ पुनि ओहि श्मशान मे हुनका पहुँचा देल जतए सँ ओ हुनका अनने छलीह।

श्मशान आबि ओहि वट-वृक्षक नीचाँ मे बैसि ओ अशोकदत्त के व्यथित भए कहए लगलीह—"हे पुत्र ! हम प्रत्येक चतुर्दशीक रात्रि कें एतए अबैत छी। ओहि तीथि कें जँ अहाँ एतए आएब तँ हमरा सँ भेंट होएत।"

एहि प्रकारेँ राक्षसी सँऽ विदाह भए ओ अपन पिताक एह तँऽ अएलाह मुदा विद्युत्प्रभाक स्नेह बंधन मे तेहेन ने बाँधल छलाह जे परोक्ष मेलहुँ हुनका ओकर प्रत्यक्षक भान होइन्ह मुदा आलिंगनार्थ जखन ओ अपन हाथ बढ़बथिन्ह तँऽ प्रतीत होइन्ह जे ओकर लावरयक प्रकाश मे आँखि चोन्हरा गेला सँऽ ओ जेना नहि भेटथिन्ह।

अशोकदत्त केँ देखि पिता एवं माता केँ अपार हर्षक तँऽ कोनो कथे नहि हुनक प्रत्यागमनक संवाद सुनि समस्त नगरक लोक केँ आनन्द भेलैन्ह। काशी-राज सेहो दौड़ल एलाह तथा स्नेह पूर्वक हुनका ओ अपन अङ्ग लगौलथिन्ह। पतिक आगमन जानि कामदेवक साक्षात् अस्त्रसन रूपक निधि एवं स्रष्टाक उत्कृष्ट कृति मदनलेखा जनिका विरह ओ विरतिक अवस्था मे अंगरागक चानन तप्त करैत छल, कुसुम सरसन बेधैत छल तथा शीतल हार कष्टकर प्रतीत होइत छल, ओ तन मे संकोच एवं मोन मे प्रीतम-मिलनक अपूर्व उत्कण्ठा मे कर्पूर-युक्त पानक सेवन सँऽ प्रत्यूष काल मे सूर्यक उदयसन तथा केश विन्यास सँऽ सघन कृष्णवर्णक गोपुर पर स्थित चन्द्रमा सन प्रतीत भेलीह। मदनलेखाक भवन जाए अशोकदत्त अविकसित केतकीक रसगन्धक लुब्ध भ्रमरसन आभूषणक झंकार सँऽ झंकृत वनकुञ्ज शब्द मध्य लीन भए गेलाह। तदुपरान्त अशोकदत्त राजभवन जाए मूर्तिमान आनन्द ओ साक्षात् दोसर चानसन दीप्तिमान पयजेबक जोड़ा एवं लक्ष्मीक नीलकमल सन सुन्दर स्वर्णकमल राजा केँ सादर समर्पण कएलथिन्ह।

पयजेबक जोड़ा एवं स्वर्णकमल केँ प्राप्त कए राजा अत्यन्त हर्षित भेलाह तथा ओ ओहि स्वर्ण कमल केँ चानीक कलश मध्य स्थापित कएलैन्ह जे स्वेत एवं रक्तक संयोग भेला सँऽ यश एवं प्रताप सन भाषित होइत छल।

एक दिन राजा ओहि अनुपम शोभाकेँ निरखि भगवान शंकरक कल्पना मे विभोर भए बाजि उठलाह जे "स्वर्ण कमल सँऽ एहि कलशक शोभा महादेवक लाल-पीयर जटासन प्रतीत होइछ। जाहि चेतन तत्त्व सँऽ प्राणीमात्र मे प्राणक संचार होइछ ताहि सँऽ प्रकृतियहुँ स्पन्दनशील होइत अछि। अतएव तत्त्वदर्शी भगवान शंकरक जल, अग्नि, होता, सूर्य, चन्द्र, आकाश, पृथ्वी एवं वायु एहि आठ रूपक दर्शन करैत छथि। सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, जल आदि तँऽ हुनके रूप एवं ज्योति केँ विकीर्ण करैत अछि जे हुनक प्रत्यक्ष विग्रह सन अछि तथा जल, थल, अग्नि, पवन सभ मध्य जनिक साम्य दृष्टि रहैछ हुनका हेतु प्रकृतिक प्रत्येक रूप प्रीति-कर एवं प्राणवन्त थिक।" राजाक एहि तरहक आनन्दोन्मत्त वचन केँ सुनि अशोक-दत्त अकस्मात् बाजि उठलाह—"हे राजन ! प्रजावत्सल राजाक सतत् यश ओ कीर्त्ति

बढ़ैछ एवं प्रजा राजाक मनोरथक पूर्त्ति मे अपन समस्त शक्ति कें लगबैत अछि। अतएव हम अहाँक हेतु दोसरहुँ कमल आनब।"

अशोकदत्तक एहि तरहक वचन यद्यपि राजाक मनोनुकूल छल तथापि अपन पुत्रीक स्नेहार्थ एवं ओकर भावी पति-वियोग कें स्मरण कए उद्विग्नतापूर्वक ओ बाजि उठलाह—"नहि ! नहि !! अहाँ व्यर्थक कष्ट जनु करी। हमरा दोसर कमलक कोनो आवश्यकता नहि अछि।" मुदा विषाद धैर्य कें, यौवन विनय कें, तथा कामदेव लज्जा कें अपहरण करैछ। रमणीक मनोहर कटाक्ष द्वारा आहत व्यक्ति अत्यन्त लघुता कें प्राप्त होइछ तथा ओहि व्यक्ति मध्य गुरुवर्गक आज्ञाक पालनक प्रवृत्ति अन्तर्धान भए जाइछ।

कृष्ण चतुर्दशी आएल। स्वर्णकमलक उत्कण्ठा एवं विद्युत्प्रभाक कामदेवक चमर सन केशपाश, नीलकमल मध्य स्थित भ्रमरसन अति मनोज्ञ कान्ति, नीलमणि ओ लालमणिक प्रान्तभाग पर स्थित चन्द्रकान्तमणि सन नेत्र एवं ज्योत्स्ना युक्त पूर्णिमाक चानसन मुखमण्डल पवन सँऽ प्रवृद्ध अग्निसन अशोकदत्तक तृष्णा कें प्रज्वलित कएल जाहि वश ओ मदनलेखा कें सुतलि छोड़ि अपन भवन सँऽ निष्क्रान्त भए पुनि ओहि श्मशान मे अएलाह। वस्तुतः स्नेह सँ बढ़ि पाश, तृष्णा सँऽ बढ़ि मनोहर स्रोत एवं राग सँऽ बढ़ि आन अनुराग नहि होइछ।

श्मशान अएला पर ओहि वट-वृक्षक नीचाँ ओहि राक्षसी कें बैसल देखलथिन्ह जे हुनक प्रतीक्षा करैत छलीह। तदुपरान्त ओ ओकर संग ओकर गृह गेलाह।

ओतए पतिक वियोग मे विद्युत्प्रभा नितान्त व्यथित छलीह। ओकर स्वच्छ मुखमण्डल पर स्वच्छन्दता सँऽ लटकल कारी नागसन केशक लट तिरछी चितवन कें अवरुद्ध कएने छल, काजरक अभावे एवं मधुपानक त्याग कएला सँऽ भौंह अपन स्वाभाविक चंचलता कें छोड़ि देने छल तथा चन्द्रमाक ज्योत्स्ना सन दीप्ति मुखमण्डल स्नेह सँऽ आतुर एवं चिन्ता सँऽ कातर भए जे मलीन भएगेल छल पुनः पतिक आगमन सँऽ समस्त दिशा मे चानन सन चर्चित सौरभ एवं अपन सौन्दर्य किरणक समूह कें दूर तक प्रसारित करैत सरस नूतन चन्द्रमा सन प्रतीत भेलीह।

वस्तुतः कुलीन स्त्रीक यौवन, रूप एवं लावण्य तथा शृंगार प्रिय कें प्रवास गेलाक उपरान्त स्वतः अन्तर्धान भए जाइछ एवं प्रत्यागमन कएला पर पुनि आपस आबि जाइछ।

अशोकदत्त ओतए सुख-पूर्वक अपन पत्नीक संग किछु दिन धरि बितौलैन्ह। तत्पश्चात् ओ एक दिन राक्षसी सँ कहलथिन्ह—"हमरा एक और स्वर्णकमल दिअ।"

अशोकदत्तक आग्रह पर ओ व्यथित भए कहल जे "हमरा दोसर स्वर्णकमल अछि कहाँ? ओहि तरहक दिव्य कमल तँ हमरा लोकनिक राजा कपालस्फोट देवक सरोवरे टा मे उत्पन्न होइछ। ओ कमल जे हम अहाँ के देल से ओहि सरोवरक छल जे राजा हमरा पति कँ उपहार स्वरूप भेंट कएने छलथिन्ह।"

राक्षसीक उक्ति अशोकदत्त कँ प्रोत्साहित करैत नव स्फूर्त्ति प्रदान कएलक तथा ओ विचारए लगलाह जे "मानी पुरुषकेँ सहज दुष्ट मार्ग होइछ। ओ आ हँ श्री कँ प्राप्त करैछ वा ओकर उपलब्धि मे अपन प्राण गमबैछ। अतएव अपन शक्तिक सहारा मात्रहिँ सँ एहि विजयश्रीक उपलब्धिक प्रयास किएक नहि कएल जाए। शक्तिहीन पुरुषक अस्त्र-शस्त्र कोन काजक हेतु होइछ?"

एहि भावना सँ प्रेरित तथा स्वर्णकमलक उत्कट अभिलाषाक वश ओ ओहि राक्षसी सँ निवेदन करैत कहलथिन्ह जे "हमरा ओहि दिव्य सरोवर पर लए चलू। हम स्वतः स्वर्ण कमल इच्छा भरि लए आनब।" अपन तरुणी कन्याक स्नेहवशात् भावी आशंका सँ भएभीत भए ओ राक्षसी अशोकदत्त कँ हताश करैत बजलीह—"असम्भव कथमपि सम्भव नहि भए सकैछ। पैघ-पैघ राक्षस ओहि सरोवरक रक्षार्थ तैनात अछि। अतएव एहि तरहक भावना सँ अनर्थ छोड़ि अर्थक प्राप्ति नहि भए सकैछ।" मुदा राक्षसीक निषेध कएलहुँ पर अखन ओ अपन हठ कोनो प्रकारेँ नहि छोड़लैन्ह तँ ओ राक्षसी अन्त मे लाचार भए अशोकदत्त कँ हिमालयक शिखर स्थित ओहि दिव्य सरोवर पर लए गेलीह। वस्तुतः स्त्री आसक्त भएला पर सभ किछु समर्पण कए दैछ किन्तु विरक्त भएला पर कारी नागसन जीवन भरि सतत् डँसैछ।

समस्त पार्थिव गुण सँ युक्त ओहि दिव्य सरोवर मे कमलिनीक सौरभ-पान सँ मदमत्त भ्रमरक, सारसीक संग रति विलास मे अनुरक्त सारसक तथा मैथुन क्रीड़ा सँ कृतार्थ भेल कुररकामिनीक कोलाहलपूर्ण शब्द विद्यमान छल। अशोकदत्त ओहि सरोवर मे प्रवेश कए स्वेच्छापूर्वक स्वर्णकमल कँ तोड़ए लगलाह।

अपन अधिकारक हनन् बूझि सरोवरक रक्षा मे तैनात राक्षस अशोकदत्त कँ रोकल मुदा अशोकदत्तक प्रहार सँ हत भए अपन स्वामी कपालस्फोट सँ जाए निवेदन कएलक। राक्षसराज अपन सेवकक दुर्दशा एवं अनाधिकार अपन सम्पत्तिक

हरख जानि अत्यन्त क्रोधित भए स्वतः ओतए अएलाह तथा अशोकदत्तक एहि कृति कें देखलैन्ह। ओ आएल तेँऽ छलाह प्रतिकारक भावना सँऽ मुदा दैववशात् अशोकदत्त कें देखितहिँ जेना हुनका किछु मोन पड़ि गेलैन्ह ओ अपन शस्त्र कें फेकि देल तथा तुरन्त हुनक पाएर पर खसि कानए लगलाह।

अशोकदत्त तेँऽ गुम छलाह। अपन क्रन्दनक स्वर मे व्यथित ओ बजलाह—"हम अहाँक कनिष्ठ विजयदत्त छी। दुर्भाग्यवश हम एतेक दिन धरि राक्षस बनल छलहुँ। आइ अहाँ सन भ्राताक दर्शन पाबि कृतार्थ भएलहुँ। अज्ञान सँऽ बुद्धि कें झपनिहार हमर राक्षसपन आब अन्तर्धान भए गेल तथा हमर ब्राह्मणतत्त्वक स्मरण पुनि हमरा भए गेल।"

जाबत दुहू गोटाक बीच एहि तरहक वार्तालाप भए रहल छल ताहि अभ्यन्तर प्रज्ञप्ति कौशिक नामक विद्याधरक गुरु आकाश मार्ग सँऽ ओतए आबि ओहि दुहू भाई सँऽ कहलथिन्ह जे "अहाँ लोकनि विद्याधर थिकहुँ। शापक कारणेँ अहाँ लोकनि एहि दशा कें प्राप्त भेल छलहुँ। आब अहाँ लोकनिक शापक अन्त भए गेल। अतः अपन विद्या कें पुनि ग्रहण कए विद्याधर लोकनिक मध्य चल जाउ।"

तत्पश्चात् ओ दुहू विद्याधर बनि, इच्छा भरि स्वर्णकमल लए अपन विद्याक प्रभावेँ आकाश मार्ग सँऽ हिमालय शिखर स्थित अपन गृह अएलाह। राक्षस कन्या हुनका लोकनि कें देखितहिँ विद्याधरी बनि गेलीह। तदुपरान्त अशोकदत्त अपन भाई एवं पत्नी विद्युत्प्रभाक संग आकाशमार्ग सँऽ वाराणसी अएलाह।

गोविन्दस्वामी कें तेँऽ विश्वासे जेना नहि होइन्ह जे ओ की सत्ये अपन दुहू पुत्र कें साक्षात्‌रूप मे देखैत छथि वा स्वप्नक भ्रम छल। अशोकदत्तक विश्वास दिऔलाह पर ओ विजयदत्त कें प्रगाढ़ आलिंगन कएलथिन्ह तथा अशोकदत्त कें भूरि-भूरि प्रशंसा करए लगलथिन्ह।

वस्तुतः सुपुत्र सँऽ पिताक सभ मनोरथक पूर्त्ति तेँऽ होइतहिँ अछि अन्त मे स्वर्गहुँ मे तृप्ति भेटैछ।

काशीराज अशोकदत्तक प्रत्यागमन एवं विजयदत्तक आश्चर्यजनक वृत्तान्त कें सुनि हर्षित भए गोविन्दस्वामीक गृह अएलाह तथा दुहू भ्राता कें अत्यधिक आदर कए सम्मानपूर्वक अपन गृह आनलथिन्ह।

अशोकदत्त राजा कें स्वेच्छापूर्वक स्वर्णकमल देलथिन्ह जकरा पाबि ओ उत्फुल्ल भए गेलाह तथा दुहू भ्राता कें अत्यन्त सम्मान कएलथिन्ह। तत्पश्चात् अशोकदत्त मदनलेखाक भवन जाय प्रातःकालक अविकसित पद्मिनी सन ओकरा

ओ सूर्य सदृश अपन कर स्पर्श सँ जगाए अनुराग मे परिपूर्ण भेलाह। स्वभावतः चन्द्रकिरण सँ चन्द्रकान्तमणि द्रवित भए जाइछ तथा सूर्यक किरण सँ सूर्यकान्त मणि मे अग्नि उत्पन्न होइछ।

एवंक्रमें आशाक जल सँ सिक्त एवं विरहक उष्म सँ जड़ैत जकर विकृति दर्शन[1] चित्त मे नहि भए आभूषण मे छल तथा जे अकिञ्चन[2] भेलहुँ रत्नत्रयनिवास[3] एवं आभूषण रहित होयतहुँ स्वणालंकार[4] सँ युक्त छलीह ओ परिपूर्ण सौंदर्य एवं समस्त मधुरिमाक आगार अशोकदत्त कें देखितहिँ आनन्द-विह्वल भए गेलीह।

एहि तरहें आनन्द मे समय बितैत गेल। एकदिन गोविन्दस्वामी अपन समस्त परिवारक संग आलाप करैत विजयदत्त सँ पुछथिन्ह –"हे पुत्र ओहि दिन श्मशान मे जखन अहाँ राक्षस बनि गेलहुँ तकर उपरान्तक घटना तँ हमरा नहि कहलहुँ ?"

गोविन्दस्वामीक प्रश्न सुनि अत्यन्त संकुचित भए विजयदत्त अपन वृत्तान्त प्रारम्भ कएलैन्ह—"हे तात भावी प्रबल होइत छैक। हम सहज बाल-सुलभ चँचलता सँ चिता मे जड़ैत कपार कें दैववशात् फोड़लिऐक। ओहि सँ बाहर भेल चर्बीक स्रोत जखन हमर मुँह मे पड़ल माया सँ मूढ़ भए हम तत्क्षण राक्षस बनि गेलहुँ तथा हमर सभ संस्कार एवं स्मृति लुप्त भए गेल। तदुपरान्त आन-आन राक्षस हमर नाम कपालस्फोट राखि हमरा अपन मण्डली मे बजौलक तथा हम ओहि मण्डली मध्य सम्मिलित भए गेलहुँ। ओ लोकनि हमरा अपन राजाक समक्ष लए गेल। राजा हमरा देखितहिँ अत्यन्त प्रसन्न भए गेलाह तथा ओ हमरा अपन सेनापति बनौलैन्ह।

राक्षसक राजा एकबेर अहंभाव कें प्राप्त कए गंधर्व पर आक्रमण कएल जाहि मे ओ स्वयं तँ मारल गेलाह मुदा आन-आन राक्षस हमर पराक्रम पर मुग्ध भए हमर शासन स्वीकार कएलक तथा हम राक्षस नगरीक राज्य करए लगलहुँ। एवं-क्रमें मोह एवं मद मे लीन ओ संस्कृति सँ हीन सतत् अहंकार मे हम अपन दिन व्यतीत करैत छलहुँ। तदुपरान्त पूर्वजन्मक फल एवं माता-पिताक संस्कारक प्रसादात् स्वर्णकमलक इच्छा सँ आएल आर्य अशोकदत्तक दर्शन भेला सँ तत्क्षणे हमर राक्षसत्वक विनाश भेल तथा हम विद्याधरत्वक प्राप्ति कएलहुँ। एहि सँ अतिरिक्त वृत्तान्त तँ अशोकदत्तहिँ कहि सकैत छथि।

---

१ कुचेष्टा, आकार विलोकन।
२ धनादि परिग्रह सँ शून्य, वीतरागी।
३ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चरितरूप रत्नत्रय।
४ राजकुल एवं यश रूप अलंकार सँ सुशोभित।

तत्पश्चात् अशोकदत्त अपन वृत्तान्त प्रारम्भ कएल—"पूर्वजन्म मे हम दुहू भ्राता विद्याधर छलहुँ। एक समय हम दुहू भाई गालव मुनिक आश्रम मे गंगा-स्नान करैत किछु मुनिकन्या लोकनि कें देखलिऐक। ओहि कन्याक अपूर्व लावण्य एवं तारुण्यविकास कें देखि विषयरूपी विशाल अरण्य मण्डल मे लागल दावाग्निक लपट सँ व्याकुल भए हमरा लोकनिक मोन विषयक पूर्त्तिक हेतु एकान्त स्थानक अन्वेषण मे मग्न छल। हमरा लोकनिक कुभावना कें अपन विद्याक प्रभाव सँ जानि हमर बन्धुवर्ग हमरा लोकनि कें श्राप देलैन्ह "जे अहाँ लोकनि मर्त्यलोक मे अवतीर्ण भए पारस्परिक वियोग व्यथा सँ पीड़ित होएब तथा मनुष्यक अगम्य देश मे भेंट भेलापर अपन तत्त्व सँ अवगत भए जाएब तथा ओहि समय विद्याधरक गुरु सँ विद्या प्राप्त कए अहाँ दुहू श्राप सँ मुक्त भए पुनि विद्याधर बनि जाएब।"

एहि तरहेँ श्रापक अन्त भेला सँ अशोकदत्त अपन विद्याक प्रभाव सँ अपन माँता-पिता एवं पत्नी कें विद्या प्रदान कए विद्याधर बनौलैन्ह तथा काशी राज प्रतापमुकुट सँ आज्ञा लए सपरिवार आकाश मार्ग सँ विद्याधर लोक कें गेलाह।

एहि तरहेँ दिव्य पुरुष श्रापक कारणे मनुष्य लोक मे जन्म लैत अछि तथा अपन स्वरूपक अनुरूप बल एवं उत्साह कें धारण कए दुष्प्राप्य कार्यहुँ मे सफलता प्राप्त करैत अछि।

अतएव हे नरश्रेष्ठ ! हमरा बुझने तँ अहूँ अपन मनोरथक पुर्त्ति केनिहार कोनो देवताहिक अंश छी तथा अहाँक प्रियतमा सेहो अवश्य दिव्य स्त्री थिकीह अन्यथा ओ कन्या कनकपुरी देखनिहारे पतिक स्पृहा किएक करतीह !"

विष्णुदत्तक सद्भावना ओ उत्साहवर्द्धक कथा शक्तिदेवक हृदय मे नव शक्तिक संचार कए कनकपुरी देखबाक अभिलाषा कें और सुदृढ़ कएलक तथा नाना प्रकारक भावक तरंग मध्य हुनक मोनरूपी नाव तरंगित होमए लागल।

भोरभेल। सत्यव्रत ओहि मठ मे अएलाह तथा शक्तिदेव सँ भोजन-साजन आदिक प्रसंग मे पूछि कहल जे "समुद्र मध्य रत्नकूट नामक एक द्वीप अछि। एहि द्वीप मे समुद्र भगवान विष्णुक स्थापना कएने छथि। आषाढ़क शुक्लपक्षक द्वादशी कें ओतए यात्राक मेला लगैछ। ओहि अवसर पर भगवान विष्णुक पूजाक हेतु ओतए प्रत्येक द्वीपक यात्री अबैत अछि। सम्भव थिक जे कोनो यात्री सँ ओतए कनकपुरीक पता भेटि जाएत। अतएव ओतहि चलल जाए।"

सत्यव्रतक कथनानुसार शक्तिदेव सत्यव्रतक संग समुद्रमार्ग सँ रत्नकूट द्वीप कें प्रस्थान कएलैन्ह। समुद्रक अगाध जल-राशि मध्य टापू सन-सन पैघ माँछ तथा भवन सन-सन नाव कें देखि शक्तिदेव तँ क्षुब्ध छलाहे मुदा पाँखियुक्त

एवं पर्वताकार एक विचित्र वस्तु कें देखि शक्तिदेव कें अत्यन्त आश्चर्य भेलैन्ह। ओ विस्मयपूर्वक सत्यव्रत सँऽ पुछलथिन्ह— "हे मित्र! ओ कोन वस्तु थिकैक!" सत्यव्रत उत्तर दैत बजलाह जे "ओ वटवृक्षक रूप मे देवता थिकाह। नीचाँक आवर्त्त कें वड़वानलक मुँह कहल जाइछ। एहि मे पड़ला सँऽ लोक पुनि आपस नहि भए सकैछ। अतएव मल्लाह एहि स्थान सँऽ हँटि अपन नाव लए जाइछ।"

सत्यव्रत शक्तिदेव सँऽ एहि तरहेँ कहितहिँ छलाह कि हुनका लोकनिक नाव जलक तीव्र प्रवाह मे भासैत दुर्भाग्यवश ओही दिसि बहि गेल। सत्यव्रत नाव कें वड़वानलक मुँह दिसि जाइत देखि अपन जीवन सँऽ हताश भए निराशाक स्वर मे कहल जे "हमरा लोकनिक मृत्यु आब सम्मुख आबि गेल। प्रारब्ध पराक्रमी होइछ। कर्मक फल सन जलक प्रवाह नाव कें वड़वानलक भयंकर मुँह मे लए आनलक जे आब कथमपि नहि बचाओल जाए सकैछ। मृत्युक सँऽ हमरा कोनो चिन्ता नहि अछि कारण के अमर भए आएल अछि मुदा चिन्ता अछि अहाँक कार्यक जे कतिपय विपत्ति सहलहुँ पर पूर्त्ति नहि भए सकल। अतएव हम यथा-शक्ति नाव कें बचेबाक उद्योग करैत छी तथा अहाँ शीघ्रे एहि वटवृक्षक एकगोट डाढ़ि कें पकड़बाक यत्न करब। सम्भव थिक ईश्वर अहाँक कल्याण करताह। हमर चिन्ता नहि करब। नित्य देह लाभ कएलहुँ पर भौतिक देहक दिशि सिद्धि पुरुषहुँ कें मृत्युक मध्य सँऽ अतिक्रमण करए पड़ैत छैन्हि मुदा जखन भाव एवं अभाव, अस्ति एवं नास्ति आदि प्रपञ्च शान्त भए जाइछ तखन पुण्य एवं पाप, सुगति एवं दुर्गति आदि विकल्पहुँक क्षय भए जाइछ। एहि अविद्या-निवृत्ति कें विद्वान मोक्ष कहैत छथि।

वड़वानलक समीप पहुँचला पर शक्तिदेव सँऽ ओहि वटवृक्षक एक गोट मोट डाढ़ि पकड़लैन्ह मुदा सत्यव्रत परोपकार मे अपन प्राण गमौलैन्ह। लोक विचारैत किछु अछि आ होएत छैक किछु। यत्नपूर्वक सुख प्राप्तिक हेतु कएल सभ प्रयास क्षण मात्रहिँ मे जलक फेन सदृश जलहिँ मे बिलाए जाइछ।

वटवृक्षक शाखा पर आश्रय पाबि शक्तिदेव अदृष्टक फल पर विचारए लगलाह। शोक एवं चिन्ता मे लीन भए ओ निराशाक समुद्र मध्य आशाक सहारा मात्रहिँ पर अपन जीवन धारण कएने छलाह। कनकपुरी देखबाक दुराभिलाषाक हेतु ओ सत्यव्रत सन हितैषी मित्र कें गमौलैन्ह।

नानाप्रकारक चिन्ता मे दिन बीत गेल। अन्त मे उद्विग्न भए ओ अपन प्राणार्पणक हेतु उद्यत भए गेलाह। एहि अनन्तर ओहि वृक्ष पर विविध देश-

देशान्तर सँ आएल पक्षीगण अपन अपन बसेरा लेलक जे परस्पर मनुष्यक बोली मे वार्त्तालाप करैत छल। जे पक्षी जतए ओहि दिन चरए गेल छल। ततएक वृत्तान्त ओ एक दोसरा सँ कहैत छल। ओहि पक्षी मध्य सँ एक वृद्ध पक्षी बाजल जे "हम आइ कनकपुरी चरए गेल छलहुँ तथा काल्हि फेर जाएब।

शक्तिदेव कें ओहि पक्षीक वचन अमृतसन सुखद लगलैन्हि। जाहि नगरीक दर्शनक निमित्त ओ एतेक विपत्ति कें सहलैन्ह आखिर ओकर स्तित्वक तँ हुनका पता चललैन्ह। अतएव नामक श्रवण मात्रहिँ पर ओ हर्षित भए अपन सभ संताप कें बिसरि शनैः शनैः ओहि पक्षीक समीप जाए ओकर पाँखिक अन्दर नुकाए रहलाह।

प्रातःकाल आन-आन पक्षी अपन-अपन गन्तव्य स्थान कें गेल तथा ओ वृद्ध पक्षी पाँखिक नीचाँ नुकाएल शक्तिदेव कें लए कनकपुरी पहुँचल। ओतए ओ एक विलक्षण उद्यान मे उतरि गेल। शक्तिदेव ओकर पाँखिक नीचाँ सँ हँटि दूर जाए टहलए लगलाह।

कनकपुरीक उद्यान मे टहलैत शक्तिदेव दुइ गोट दिव्य स्त्री कें फूल तोड़ैत देखलथिन्ह जकर अपूर्व लावण्यक समक्ष, बेली, चमेली, जूही, माधवी एवं केतकी मलीन बुझना जाइत छल। प्रातः कालीन पवन सुमन-समूह एवं दुहू तरुणीक रूपक मादक सौरभ सँ शक्तिदेवक क्लान्त मोन कें पुलकित कए देल।

शक्तिदेव ओहि दुहू स्त्रीक समक्ष जाए जिज्ञासा कएल जे—"हे सुन्दरि! ई कोन स्थान थिकैक? तथा अहाँ लोकनि के छी?"

शक्तिदेवक प्रश्नक उत्तर दैत ओ स्त्री बजलीह—"ई विद्याधरक स्थान कनकपुरी नामक नगर थिकैक। एहि नगर मे चन्द्रप्रभा नामक विद्याधरी रहैत छथि। हमरा लोकनि हुनके मालिन छी।" शक्तिदेव ओहि दुहू स्त्री सँ विनति कएल जे हम अहाँ लोकनिक स्वामिनी विद्याधरकुमारिक दर्शनाभिलाषी छी। तदर्थ अहाँ लोकनि हमरा हुनका सँ भेंट करेबाक कष्ट करी।"

एहि तरहेँ शक्तिदेवक आग्रह कएला पर ओ स्त्री हुनका नगर मध्य स्थित माणिक्यक स्तम्भ एवं सोनाक दिवार सँ युक्त लक्ष्मीक भवन सन एक दिव्य भवन मे लए गेलैन्ह तथा प्रतिहारी द्वारा शक्तिदेवक आगमन एवं हुनक अभिप्रायक प्रसंग मे चन्द्रप्रभा कें अवगत कराओल।

प्रतिहारीक द्वारा मनुष्यक अगम्य आगमनक प्रसंग मे जानि विद्याधरकुमारि अत्यन्त विस्मित भेलीह तथा उत्सुकतापूर्वक अतिशीघ्रहिँ हुनका अपन समक्ष बजौलथिन्ह।

मोन मे भाव एवं तन मे उत्कण्ठाक उद्रेकक संग ओ ओहि दिव्य भवन मे प्रवेश कएल जकर मणि जटित अटारी सूर्यक किरण पड़ला सँ स्वतः सूर्यसन प्रतीत होइत छल।

शक्तिदेव केँ देखितहिँ दिव्य रत्नक पलंग पर सँ उठि चन्द्रप्रभा, बसात मे हिलैत नीलकमल सन चंचल कटाक्ष एवं यौवनभार सँ किंचित् झुकल, प्रातःकालीन सूर्यसन अरुण वस्त्र केँ धारण कएने चन्द्रमा सन मुँहक कान्ति एवं मयूरक पाँखिक भंगिमा सन केशकलाप सँ युक्त अपन लाल ओठ केँ कमलसन प्रस्फुटित करैत अमृतसन वचन मे हुनक स्वागत कएलथिन्ह।

शक्तिदेव रूप एवं लावण्यक साक्षात् प्रतिमा केँ देखि प्रथम दर्शनहि मे ओ भ्रमर सन ओकर मादक सौंदर्य पर मुग्ध भए गेलाह। वस्तुतः विरहानुभूति सँ प्रेमी एवं सौंदर्यानुभूति सँ रसिक अत्यन्त कोमल भए जाइछ।

चन्द्रप्रभा शक्तिदेवक यथोचित आतिथ्य सत्कारक पश्चात् अत्यन्त स्नेह सँ पुछलथिन्ह—"हे पुरुष श्रेष्ठ! मनुष्यक हेतु तँ ई दुर्गम्य स्थान थिक। एतए अहाँ कोना अएलहुँ तथा अहाँक परिचय-पात की थिक?"

चन्द्रप्रभा द्वारा एहि तरहेँ पुछला पर शक्तिदेव अपन मनोरथ, देश, जाति आदि समग्र वृत्तान्त चन्द्रप्रभा केँ कहि सुनौलथिन्ह।

शक्तिदेवक वृत्तान्त सुनि चन्द्रप्रभाक मुखमण्डल पर एक अपूर्व दीप्ति एवं ओठ पर मधुर मुस्कान परिलक्षित भेल तथा पुनि ओ गंभीर भए चिन्तना मे मग्न भए गेलीह। स्मृति एवं विस्मृत मध्य भावी कल्पनाक उद्विग्नता मे ओ दीर्घ उच्छ्वास लए कहए लगलीह—"एहि भूमि पर शशिखण्ड नामक विद्याधरक राज्य अछि। ओहि विद्याधरक हमरा लोकनि क्रमशः चारि कन्या जाहि मे सभ सँ ज्येष्ठ चन्द्रप्रभा हम; चन्द्ररेखा दोसर, शशिरेखा तेसर तथा शशिप्रभा चारिम थिकिऐन्हि।

एकदिन हमर तीनू छोट बहिन गंगा स्नानक हेतु गेलीह। ओ लोकनि यौवन मद मे मस्त भेला सन्ता जल-क्रीड़ा करैत निरर्थक उग्रतपा नामक ऋषि केँ जल सँ भिजाबए लगलीह। हुनका लोकनिक धृष्ट व्यवहार एवं यौवनक उन्माद पर मुनि क्रुद्ध भए श्राप देलथिन्ह जे—"अहाँ लोकनि मर्त्यलोक मे उत्पन्न होएब।"

हुनका लोकनिक श्रापक प्रसंग मे अवगत भेला पर हमर पिता ऋषि केँ अनुनय विनय कए पुनि प्रसन्न कएलथिन्ह तथा ऋषि हुनका लोकनिक श्रापक अन्त पृथक-पृथक रूप मे दए कहलथिन्ह जे "दिव्य ज्ञान सँ बढ़ल पूर्व जन्मक स्मरण मानव जन्महुँ मे हुनका लोकनि केँ बनल रहतैन्ह"।

मुनिक श्रापक प्रभावेँ ओ तीनू बहिन टँ विद्याधर-शरीर त्यागि तत्क्षण

मर्त्यलोक मे चलि गेलीह तथा हमर पिता एहि नगरक राज्य हमरा दए बन प्रस्थान कयलैन्ह। तदन्तर हमरा पार्वती स्वप्न मे दर्शन दए वरदान देलैन्ह जे "तोहर पति मनुष्य होएथुन्ह।"

अतएव विद्याधर जातिक अनेको पराक्रमी एवं स्वरूपवान पुरुष कें छोड़ि हम एखन धरि कुमारिये छी। ईश्वरेच्छा सँऽ अहाँक सम्पर्क हमर प्रारब्ध सँऽ भेल अछि। काञ्चन पर्वत सन अहाँक कान्ति हमर चित्त कें अकस्मात उन्मत्त बनौलक तथा हमर कान, अङ्ग, नेत्र एवं मनोभाव कें क्रमशः अहाँ अपन वचन, स्पर्श, रूप एवं गुण सँऽ हरण कए लेलहुँ। आब अहाँ सतत् एतहि रहि हमर संग विवाह कए एहि नगरीक राज्य करू।"

चन्द्रप्रभाक श्वेत शंख सन उजर बाँहि, स्वाभाविक चंचल नेत्र एवं रूप ओ यौवनक गर्व मे मस्त शारीरिक सौंदर्यक प्रदर्शन पूर्ण रूप सँऽ शक्तिदेव कें मोहि लेलक। वस्तुतः तरुणी पुरुषक चित्त कें तँ हरण करितहिं अछि संगहि ओ पुरुषक निकृष्ट एवं उत्कृष्ट मनोभावहुँ कें आकृष्ट कए लैछ।

कनकपुरी मे शक्तिदेव कें पाबि चन्द्रप्रभाक सौंदर्य मणि, मोती एवं स्वर्णक अलंकार सँऽ अलंकृत भेला सँऽ अत्यधिक निखरि उठल जकरा ओ अतृप्त नेत्र सँऽ पान कए रहल छलाह।

एवंक्रमें कनकपुरी मे आनन्दपूर्वक रहैत एक दिन चन्द्रप्रभा शक्तिदेव सँऽ कहल—"अग्रीम चतुर्दशी तिथि कें हम ऋषभ नामक पर्वत पर जाएब। ओतए प्रतिवर्ष एहि पर्वक अवसर पर शिव पूजाक उपलक्ष मे एक मेला लगैत अछि। एहि अवसर पर ओतए प्रत्येक दिशा सँऽ विद्याधर अबैत छथि। हमर पिता ओतए एहि अवसर पर सेहो औताह। अतएव हम ओतए जाए हुनका सँऽ अहाँक आगमनक प्रसंगमे सूचना दए एवं विवाहक हेतु हुनक आज्ञा लए हम पुनि आपस आएब तखन हम अहाँक संग विधिवत विवाह कए लेब। तावत अहाँ एतहि विश्राम करब।"

चतुर्दशी तिथि कें समीप एलाह पर चन्द्रप्रभा शक्तिदेव कें पुनः स्नेहातुर भए कहल— "हम तँऽ ऋषभ पर्वत कें जाएत छी तथा अहाँ कोनो चिन्ता नहि कए आनन्दपूर्वक रहब मुदा महज एक बात स्मरण राखब। अहाँ एहि भवनक समग्र भाग मे तँऽ जाएब किन्तु एकर तेसर मंजिलक तीनू कोठरी मध्य कथमपि नहि जाएब।"

एहि तरहें शक्तिदेव कें चेताए विद्याधर कुमारि अपन सेवकक संग आकाश मार्ग सँऽ ऋषभ पर्वत कें प्रस्थान कएलीह।

चन्द्रप्रभाक गेलाक उपरान्त शक्तिदेवक मोन मे तरह-तरहक भाव उत्पन्न

भेल। ओ विद्याधर कुमारिक एहि आग्रह एवं आदेश पर शंकित भए विचारए लगलाह—"चंचल इन्द्रीय सँऽ युक्त एवं विषय भोग सँऽ उत्फुल्ल युवती कँऽ धार्मिक कार्यहुँ केँ सम्पादन करैछ तँऽ आश्चर्यक विषय होइत अछि। अतएव विद्याधर कुमारिक एहि तरहक आदेश निःसंदेह निरर्थक नहि भए विशेष अर्थक सूचक थिक। अन्त मे जिज्ञासाक प्रबल आवेग मे आबि शक्तिदेवक प्रवृत्ति निषेधक प्रतिकूल जाए ओही तेसर मंजिलक प्रथम कोठरी मध्य ओ प्रवेश कएलैन्ह।

ओहि कोठरी मे एक दिव्य पलंग पर रेशमी चादर ओढ़ने सुतलि एक गोट व्यक्ति केँ देखलथिन्ह। ओढ़ना हटौला पर शक्तिदेव केँ असीम आश्चर्य भेलैन्ह। रूप एवं लावण्य, आकृति आदिक पूर्णरूपे निरीक्षण कएला पर ओ साक्षात् परोपकारी राजाक पुत्री कनकरेखा प्रतीत भेलह जनिक प्राप्तिक उद्देश्यमात्र सँऽ ओ ओतए धरि अएलाह। कनकरेखाक निर्जीव शरीर केँ एहि तरहेँ देखि शक्तिदेव किंकर्त्तव्यविमूढ़ भए ओतए सँऽ दोसर एवं तेसर कोठरी मध्य प्रवेश कएलाह तथा ओही तरहेँ सुतलि अन्य दूइ कन्या केँ ओ ओतहुँ देखलथिन्ह जे दुहू निर्जीव भेलहुँ सौंदर्यक प्रतिमूर्त्ति एवं आकर्षणक केन्द्र छलीह।

शक्तिदेव एहि तीनू कन्या केँ निर्जीव देखि अत्यन्त तारतम्य मे पड़ि सोचए लगलाह मुदा कोनो निष्कर्ष पर नहि पहुँचि अन्त मे ओ ओहि मंजिल सँऽ बाहर भए भवनक नीचाँ मे एक अपूर्व सरोवर केँ देखलथिन्ह जे नीलकमल, हंस एवं पवनक झकोड़ सँऽ उठल तरंग सँऽ मनमोहक प्रतीत भए रहल छल। एहि दिव्य सरोवरक मोहार पर रत्नक जीन सँऽ सज्जित एक दिव्य घोड़ा छल। शक्तिदेव केँ ओहि घोड़ा पर चढ़बाक उत्कण्ठा भेलैन्ह। अतएव जा ओ ओकरा पर चढ़बाक उपक्रम कएलैन्ह कि ओ घोड़ा हुनका लथार मारि सरोवर मे खसाए देल।

सरोवर मे खसितहिँ शक्तिदेव वर्द्धमान नगर स्थित अपन उद्यानक सरोवर मे अपना केँ पाबि विस्मित एवं शोक सँऽ सन्तप्त भए अत्यन्त कातर रूपे विलाप करए लगलाह। मुदा फूल एवं फल सँऽ पृथक भेला सन्ता जँऽ वृक्ष काटल जाइछ तँऽ दोसर वृक्ष शोकाकुल नहि होइछ। अतएव समागम ओ वियोग तँऽ जगतक रीतिए थिकैक आदि विचार सँऽ अपना केँ धैर्य प्रदान करैत एहि घटना केँ ईश्वरेच्छा बूझि कनकरेखाक प्राप्तिक मोन मे उदभर् अभिलाषा लए पुनि राजाक सेवकक समक्ष जाए विज्ञप्ति कएल जे "हम कनकपुरी देखल अछि।"

राजा सेवकक द्वारा अवगत भएला पर हुनका मिथ्या भाषी बूझलथिन्ह मुदा शक्तिदेव द्वारा वारम्बार कहला पर ओ कनकरेखा केँ ओतहि बजाए एहि प्रसंग मे ओकरा अवगत करौलथिन्ह। राजकुमारी शक्तिदेव के पुनि देखि विहुँसैत बजलीह जे "हे पिताजी! पुनः ई व्यक्ति मिथ्या भाषणक हेतु अएलाह अछि ई तँऽ असत्य बजताह।"

राजकुमारीक एहि तरहक वचन सुनि शक्तिदेव उत्सुकतापूर्वक बाजि उठलाह—"हे राजकुमारी ! हम सत्यवादी छी वा मिथ्यावादी एकर निर्णय तँऽ पाछाँ होएत मुदा अहाँ हमर एक कौतुकक तँऽ निवारण करू ! कनकपुरी मे रत्नक पलंग पर अहाँ केँ हम मृतक रूप मे देखल और एतए सजीव रूप मे देखैत छी ! एहि मे कोन रहस्य छैक से हमरा कहू ।"

शक्तिदेवक एहि उक्ति केँ सुनि कनकरेखा विस्मयपूर्वक अपन पिता सँऽ बजलीह "हे पिताजी ! सत्ये ई कनकपुरी देखलथिन्ह अछि । अतएव ई शीघ्रे कनकपुरी गेला पर हमर पति होएताह तथा ओतए ई हमर आनो तीन बहिन सँऽ विवाह कए विद्याधर नगरीक राज्य प्राप्त करताह । हम मुनिक शापक कारणे अहाँक गृह उत्पन्न भेल छलहुँ । आब हमर शापक अन्त भए गेल । अतः हम अपन पूर्वक कलेवर मे प्रवेश कए अपन दिव्य लोक केँ जाए रहल छी ।"

एहि तरहेँ अपन पिता सँऽ कहि कनकरेखा अपन मानव शरीर त्यागि अन्तर्हित भए गेलीह तथा राजभवन मे कानब-खीजब होमए लागल ।

कनकरेखाक एहि तरहेँ अन्तर्धान भेला सँऽ शक्तिदेव शोकातुर भए विलाप करए लगलाह । वस्तुतः उपवास एवं तपश्चर्या द्वारा क्षीण, तीर्थाटनक पुण्य सँऽ नष्ट एवं धर्माचरण द्वारा मिझाएल पुरुषक कामाग्नि पुनि रमणीक कटाक्षक दर्शन सँऽ प्रज्वलित भए जाइछ । रूप ओ यौवन धर्म एवं अर्थक शत्रु तँऽ होइतहिँ अछि मुदा एहि मे परि प्रज्ञाशील व्यक्तियो भ्रान्त भए नाना प्रकारक कष्ट केँ सहन करैत छथि ।

शक्तिदेव कनकरेखाक वियोगानिल मे संतप्त भए विचारलैन्ह जे ओ किएक नहि पुनि ओही मार्ग सँऽ कनकपुरीक यात्रा करथि जतए कनकरेखा गेलीह अछि ?

वस्तुतः अर्थ एवं धर्म केँ परिपीड़ित कए जे कार्य होइछ, धर्म एवं काम केँ दबौला सँऽ जे अर्थ होइछ तथा काम एवं अर्थक विनाश कएला सँऽ जे धर्म होइछ तकरा परित्याग कएले सँऽ उद्देश्यक पूर्त्ति भए सकैछ ।

कनकरेखाक प्राप्तिक दृढ़ संकल्प कए शक्तिदेव वर्द्धमान नगर सँऽ अनेक दिनक यात्राक उपरान्त फेर ओ विटंकपुर नगर मे अएलाह । ओतए ओ पुनः ओही समुद्रदत्त बनिया केँ देखल जे समुद्र मे खसल छल । समुद्रदत्त शक्तिदेव केँ पूर्ण आतिथ्य सत्कार कएल तथा नाव टूटला पर ओ कोना बचलाह आदि अपन आद्योपान्त वृत्तान्त सँऽ शक्तिदेव केँ अवगत करौलथिन्ह ।

समुद्रदत्तक वृत्तान्त सुनलाक पश्चात् शक्तिदेव सेहो समुद्रदत्त केँ नाव टूटलाक उपरान्त सँऽ लए ओहि समय धरिक सभ घटना केँ कहलथिन्ह तथा ओ राति ओतहि बितौलैन्ह । भोर भेला पर समुद्रदत्त सँऽ ओ अपन इच्छा प्रकट करैत कहलथिन्ह "हे

मित्र ! हम अपन मनोरथक पूर्त्तिक हेतु पुनि उत्स्थल द्वीप जाएब। अतएव एहि प्रसंग मे अहाँक सहयोगक नितान्त आवश्यकता अछि।"

शक्तिदेवक इच्छा जानि समुद्रदत्त हुनक उत्साह एवं कनकरेखाक प्रति उत्कट प्रेमक भूरि-भूरि प्रशंसा करैत स्नेहपूर्वक कहलथिन्ह "हे मित्र ! जँ अहाँ अपन इच्छाक पूर्त्तिक उद्देश्य मे दृढ़ संकल्प कएने छी तँऽ ईश्वर अहाँक मनोरथक पूर्त्ति अवश्य करताह। हमर नाव आइए उत्स्थल द्वीह कें जाए रहल अछि। अहाँ ओही नाव सँऽ ओतए चल जाउ।"

एवंकमें शक्तिदेव समुद्रदत्तक नाव सँऽ फेर उत्स्थल द्वीप मे पहुँचलाह। ओतए आबि ओ अपन भ्राता विष्णुदत्तक मठ मे जेबाक चाहितहिं छलाह कि एहि अभ्यन्तर निषादराज सत्यव्रतक पुत्र हुनका देखि पूछल जे "अहाँ तँऽ हमर पिताक संग कनकपुरी गेल छलाँह ! अहाँ तँऽ आपस अएलहुँ मुदा हमर पिता कतए छथि !"

सत्यव्रतक पुत्रक प्रश्नक उत्तर अत्यन्त व्यथाक स्वर मे दैत शक्तिदेव कहलथिन्ह "अहाँक पिता दैववशात् बड़वानलक मुँह मे जाए एहि असार संसार सँऽ सदाक हेतु प्रस्थान कएलैन्ह।" एहि संवाद कें सुनितहिं निषादराजक पुत्र कें अत्यन्त क्रोध भेलैन्ह तथा ओ अपन सेवक लोकनि कें हुनका बान्हि लए जेबाक आदेश प्रसारित कए कहल—"ई व्यक्ति हमर पिताक हत्यारा थिकाह अतएव हम हिनका भगवती चँडिका देवी कें बलिदान दए अपन पितृऋण सँऽ मुक्त होएब।"

एहि प्रकारें सत्यव्रतक पुत्र शक्तिदेव कें बन्हवाए भगवती चँडिकाक मन्दिर मे लए अनलथिन्ह।

भगवती चँडिकाक मन्दिर मे अबितहिं शक्तिदेव अत्यन्त भएभीत भए गेलाह तथा अपन जानक रक्षाक निमित्त ओ भगवतीक स्तुति करए लगलाह। शक्तिदेवक आराधना सँऽ भगवती प्रसन्न भए स्वप्न मे दर्शन दए कहलथिन्ह—"हे पुत्र ! चिन्ता जनु करी ! अहाँक अनिष्ट नहि भए सकैछ। एहि निषादराजक पुत्र कें बिन्दुमती नामक अत्यन्त स्वरूपवती बहिन छथिन्ह। ओ कुमारि छथि। भोर होएतहिं ओ एहि मन्दिर मे औतीह तथा अहाँक रूप एवं गुणपर आकृष्ट भए अहाँ कें अपन पति बनेबाक प्रयत्न करतीह। ओ सभ तरहें अहाँक अभ्युदय कारक होएतीह तथा हुनकहिं सहयोग सँऽ अहाँक मनोरथक पूर्त्ति होएत। ओ निषादराजक पुत्री नहि एक दिव्य कन्या थिकीह जे शापक प्रभाव सँऽ पतिता भए मर्त्यलोक मे जन्म लेने छथि। अतएव अहाँ अपन स्वीकृति दए हुनक इच्छाक पूर्त्ति अवश्य करबैन्ह।"

भोर होएतहिं निषादक पुत्री बिन्दुमती चँडिकाक मन्दिर मे आबि स्वभाव सँऽ चँचल अपन नेत्र कें यत्नपूर्वक सम्हारि श्रद्धा सँऽ विनीत एवं शान्त भए भगवती

के प्रणाम कएलाक उपरान्त भगवतीक बलिदानक हेतु आनल शक्तिदेवक उपर जहिना अपन मनोहर कटाक्षक प्रहार कएलैन्हि कि ओ स्वतः हुनक मुखमण्डलक दीप्ति एवं युवत्वक कान्ति सँऽ चौंधियाए मंत्रमुग्ध भए लाज केँ छोड़ि एहि कठोर सत्य केँ शक्तिदेव सँऽ अवगत करबैत बजलीह—"हे नर श्रेष्ठ! अहाँ केँ हम एहि विपत्ति सँऽ मुक्त कराएब मुदा हमरा वचन दीअ जे अहाँ हमरा सँऽ विवाह करब।"

विन्दुमतीक आग्रह केँ शक्तिदेव सहर्ष स्वीकार कए प्रसन्नतापूर्वक ओकरा संग विवाह कए अपन मन्दराचल रूपी प्रेम सँऽ ओकर हृदयरूपी रत्ननिधि केँ ओतए रहि नित्य स्वच्छन्द भए मथए लगलाह। ओ ओहि शीलवती गजगामिनीक वैभवनिमग्न गौरवर्ण पद्मराग मणि सँऽ अलंकृत तारुण्य मे तेहेन ने मग्न भए गेलाह जे हुनका अपन उद्देश्यहुँक स्मरण नहि रहलैन्ह। वस्तुतः तरुणी चाहे हँसैत हो वा कनैत, प्रसन्न हो वा नाराज मुदा ओ सदैव पुरुष केँ मनोरमे बूझि पड़ैछ।

विन्दुमतीक संग एहि तरहेँ आमोद-प्रमोद मे शक्तिदेवक समय बितैत गेल। एकदिन भवनक छत पर विन्दुमतीक संग बैसल शक्तिदेव वार्त्तालाप कए रहल छलाह कि एहि अनन्तर अपन माथ पर गो माँस खसने एक चण्डाल केँ आइत देखि शक्तिदेव घृणाक स्वर मे अपन स्त्री विन्दुमती सँऽ पुछलथिन्ह जे "हे प्रिये! गाय यद्यपि तीनू लोक मे पूजनीया छथि तथापि ई पापी लोकनि गो माँस किएक खाइत अछि?"

एहितरहक कथा केँ सुनि विन्दुमती गंभीर भए चिन्तना मे मग्न भए सोचए लगलीह तथा अत्यन्त शोकातुर भए बजलीह—"हे स्वामी! गो माँस भक्षणक पाप सँऽ अचिन्त्य थिक! गायक मात्र थोड़ेक अपराध कएला सँऽ तँऽ हम एहि अधम निषादकुल मे जन्म लएलहुँ तथा आब एहि सँऽ कोना निवृत्ति भेटत से नहि बूझि पड़ैछ।"

विन्दुमतीक एहि तरहक उद्विग्न वचन केँ सुनि शक्तिदेव उत्सुकता पूर्वक पुछलथिन्ह—"हे प्रिये! अहाँ के छी तथा अहाँ कोना एहि निषाद कुल मे उत्पन्न भेलहुँ से सभ वृत्तान्त हमरा कहू।

शक्तिदेवक जिज्ञासा जानि स्नेहवशात् अत्यन्त धीरतापूर्वक विन्दुमती बजलीह—"हे नाथ! एहि द्वीप मे अहाँ केँ एक दोसर पत्नी सेहो होएतीह। ओ समय पाबि गर्भ धारण करतीह। गर्भक आठम मास पूरला पर अहाँ केँ ओकर गर्भ फाड़ि गर्भक नेना केँ आनि हमरा देबए पड़त। आशा अछि अहाँ एहि दुष्कर कर्म केँ अवश्य करबेक।"

शक्तिदेव कें बिन्दुमतीक एहि तरहक उक्ति सँ आश्चर्य एवं घृणा भेलैन्ह। नाना तरहक भावक तरंग मे बहि ओ सोचए लगलाह "गुण, यौवन, सौंदर्य, धन आदि कोनहु प्रकारक स्वार्थपूर्ण कामनाक अपेक्षा नहि कए जे एकांकी, निष्करुण, वा एकरूप प्रेमक प्रेमी होइछ तथा जे महज अपन प्रियतमे कें सर्वस्व बुझैछ ओएह तँ वस्तुतः प्रेमक पुजारी थिक। अतएव बिन्दुमतीक आहि प्रेम पाश मे बन्हि हम अपन स्तित्व तक कें बिसरि गेल छी ओ विशुद्ध नहि भए प्रवञ्चनामात्र बूझि पड़ैछ।"

शक्तिदेव कें खिन्न एवं मिथ्या कल्पना मे विभोर जानि हुनक भ्रमनिवारणार्थ अत्यन्त मृदु स्वर मे बिन्दुमती पुनि बजलीह—"हे स्वामी! अहाँ मोह एवं मायावश हमर उक्ति कें अनर्थरूप मे बुझलीह। हम पूर्व जन्म मे विद्याधरी छलहुँ। विद्याधर जन्म मे एक बेर पोथाक तार कें अपन दाँत सँ पुनि जोड़बाक कारणे हम एहि निषादक कुल मे जन्म लेल। अतः गायक सुखाएल चाम कें दाँत सँ मात्र छूला सँ जखन हमर एहि तरहक अधोगति भए सकैछ तखन माँस भक्षणक दोष सँ की नहि भए सकैछ!"

बिन्दुमती आबत एहि तरहक अपन कथा शक्तिदेव सँ कहितहिँ छलीह कि एहि अभ्यन्तर ओकर एक गोट भाई ओतए आबि विस्मित भए बाजल—"दौड़! दौड़!! ई सुगर कतिपय व्यक्ति कें मारि एम्हरे अबैत अछि।" एहि वचन कें सुनितहिँ शक्तिदेवक शरीर मध्य शौर्यरक्तक संचार भए गेलैन्ह तथा ओ तत्क्षण ओहि भवनक छत पर सँ उतरि एक तेज घोड़ा पर चढ़ि हाथ मे शक्ति लए ओहि सुगर दिसि दौड़लाह। सुगर अपन प्राणरक्षार्थ पड़ाएल तथा ओ ओकर पाछाँ अपन घोड़ा कें दौड़ाए अपन तीक्ष्ण बाणक प्रहार सँ ओकरा आहत कए देल।

शक्तिदेवक बाण सँ आहत भए ओ सुगर अपन बिल मे प्रवेश कएलक। शक्तिदेव सेहो ओकर अन्वेषण करैत ओहि बिल मे प्रविष्ट भेलाह। ओहि बिल मे ओ एक अत्यन्त मनोरम उद्यान कें देखलथिन्ह जतए सुमन समुहक सौरभ लए मलयसमीर स्वच्छन्दता सँ परागक वितरण करैत छल तथा नाना तरहक पक्षीगण अपन कलरव सँ वनप्रान्त कें रम्य बनौने छल। ओहि रम्यता कें एक अपूर्व स्वरूपवती कन्या अपन दीप्ति सँ अत्यधिक आकर्षण प्रदान करैत छलीह। ओ शक्तिदेव कें देखितहिँ स्नेह सँ द्रवीभूत भए हुनक हार्दिक स्वागत कए यथोचित आतिथ्य सत्कार कएलथीन्ह।

शक्तिदेव ओहि कन्याक सौंदर्य, दीप्ति, शील एवं आचरण कें देखि आकृष्ट भए ओकरा सँ जिज्ञासापूर्वक पुछलथिन्ह—"हे सुन्दरि! अहाँ के छी तथा एहि बीहर वनप्रान्त मे अहाँ कोना अएलहुँ"?

शक्तिदेवक सद्भावनापूर्ण वचन कें सुनि हर्षित भए ओ बजलीह—"हे पुरुष श्रेष्ठ! दक्षिण देश मे चँडविक्रम नामक एक राजा छथि। हम हुनके कन्या बिन्दुरेखा थिकहुँ। हमरा छल सँऽ ई पापी दैत्य हरण कए एतए अनलक अछि। ओ माँस भक्षणक हेतु सुगरक रूप धरि कतहु बाहर गेल छल जे आहत भए अपन प्राण त्यागलक। अतएव हम ओतए सँऽ पड़ाए एतए अएलहुँ अछि। आब अहाँ हमरा अपन परिचय देबाक कष्ट करू।"

स्वभाव सँऽ चंचल एवं दीर्घ नेत्र सँऽ युक्त अपन लावण्यक कान्ति सँऽ ओहि वनप्रान्त कें चन्द्रमाक ज्योत्स्नासन प्रकाशित केनिहारि बिन्दुरेखाक प्रश्नक उत्तर दैत शक्तिदेव अत्यन्त शिष्ट वाणी मे बजलाह— "हे सुन्दरि! हम एक ब्राह्मण कुमार छी। हमरहिं बाण सँऽ आहत भए ओ दैत्य अपन प्राण त्यागलक। हम अहाँक वृत्तान्त सुनि अत्यन्त दुखी छी। अतएव अहाँक हम कोन कार्य कए सकैत छी से कहबाक कष्ट करू!"

शक्तिदेवक वचन बिन्दुरेखाक दग्ध हृदय मे अमृतक संचार कएलक। कारी-कारी घटा सँ युक्त नभोमण्डल एवं अन्हार रातियहुँ कौखन मनोहर प्रतीत होइछ। बिन्दुरेखा विकसित सुमन सन प्रसन्न एवं पूर्णिमाक चन्द्रमासन कान्ति कें धारणकए स्नेहसिञ्चितस्वर मे शक्तिदेव सँऽ कहल —"हे वीर! ओ दैत्य यद्यपि हमरा हरण कए एतए अनलक तथापि ओ हमर कौमार्यक अपहरण नहि कएलक। अतएव आब तँऽ एहि बीहर वनप्रान्त मे अहीं हमर सर्वस्व थिकहुँ।"

शक्तिदेव बिन्दुरेखा कें अपन गृह आनि बिन्दुमती कें सौंपि देल तथा बिन्दुमतीक परामर्श सँऽ ओ बिन्दुरेखाक संग सेहो विवाह कएलैन्ह।

एवंक्रमें सरस्वती एवं लक्ष्मीसन रूप एवं गुण मे आगरि अपन दुहू पत्नीक संग शक्तिदेव दुख मे ने तँऽ उद्विग्न होएत छलाह आ ने सुख मे हुनका कोनो स्पृहा छलैन्ह। राग, भय, एवं क्रोध सँऽ रहित भए हुनक समय बितए लागल।

किछु दिनक उपरान्त बिन्दुरेखा गर्भवती भए गेलीह। क्रमशः गर्भक आठम मास पूरि गेल। अतएव बिन्दुमती शक्तिदेवक समक्ष जाए कहल— "बिन्दुरेखाक गर्भक आठम मास भए गेल। अतएव अहाँ अपन प्रतिज्ञाक पालनार्थ ओकर गर्भ फाड़ि गर्भक नेना कें लए आनू"।

शक्तिदेव तँऽ किंकर्त्तव्यविमूढ़ छलाह। एक दिशि पुत्रक स्नेह एवं दया छल तथा दोसर दिसि संकल्प एवं पराधीनताक बंधन। ओ एहि द्वन्द विचार मे परि विह्वल भए किछु काल धरि निस्तब्ध रहलाह मुदा कर्त्तव्यक समक्ष स्नेह एवं दयाक बंधन शिथिल भए गेल तथा ओ आवेश मे आबि कर्त्तव्य पालनक हेतु तँऽ बिन्दुरेखाक समक्ष गेलाह मुदा बिन्दुरेखा कें देखितहिं स्नेह सँऽ द्रवीभूत एवं

चिन्ता सँऽ कातर भए श्रो पुनः उद्विग्न भए श्रोतए सँऽ प्रत्यागमनक हेतु उद्यत भए गेलाह।

बिन्दुरेखा शक्तिदेव कें उद्विग्न देखि सान्त्वना दैत अत्यन्त स्नेहपूर्वक बजलीह— "हे स्वामी! हम जनैत छी जे बिन्दुमती श्रहाँ कें एतए हमर गर्भ काढ़ि गर्भक नेना कें श्रनबाक हेतु पठौलैन्ह श्रछि। श्रहाँ एहि कार्य कें बिना कोनो तारतम्य कें अवश्य पूर्ण करू आहि सँऽ समहक मनोरथक पूर्ति होएत। एहि मे कोनो दा क्रूरता नहि छैक। हे नाथ! एहि प्रसंग मे हम श्रहाँ कें देवदत्त नामक एक ब्राह्मणक कथा कहैत छी—

देवदत्तक कथा

"प्राचीन काल मे कम्बुक नामक नगर मे हरिदत्त नामक एक ब्राह्मण छलाह। हुनका देवदत्त नामक एक पुत्र छलथिन्ह। देवदत्त विद्वान भेलहुँ सन्ता जुआक व्यसनी छलाह। एक बेर श्रो जुआ मे अपन समस्त धन कें हारि अन्त मे वस्त्रहुँधरि हारि गेलाह। तत्पश्चात् श्रो अपन कृत पर लज्जित भए अपन पिताक गृह नहि आए एक मंदिर मे गेलाह। श्रोहि मंदिर मे रत्न, स्वर्ण, नाना प्रकारक धन सम्पत्तिक मध्य जालपाद नामक तपस्वी एकान्त मे तपस्या मे मग्न भए रहैत छलाह।

देवदत्त श्रोहि तपस्वीक समक्ष जाए हुनका प्रणाम कएलथिन्ह। तपस्वी देवदत्त कें बड़ श्रादर सत्कार सँऽ बैसौलथिन्ह। किछु कालक उपरान्त श्रो देवदत्तक श्रोहि परिस्थितिक प्रसंग मे पुछलथिन्ह। देवदत्त श्रोहि तपस्वी सँऽ अपन पतनक आद्योपान्त वृत्तान्त कहि सुनौलथिन्ह।

देवदत्तक वृत्तान्त सुनि तपस्वी अत्यन्त स्नेहपूर्वक कहलथिन्ह—"हे पुत्र! व्यसनीक हेतु पृथ्वी धनहीन छथि। तखन एक युक्ति श्रछि से जँऽ श्रहाँ हमर कथनानुसार कार्य करी तँऽ हम श्रहाँक कष्ट निवारणार्थ श्रोहि युक्ति कें कहब तथा श्रहाँ हमर श्राज्ञाक अनुवर्त्ती भए पालन करब।"

तपस्वीक एहि तरहक स्नेहपूर्ण कथा कें सुनि देवदत्त बड़ प्रसन्न भेलाह। श्रो अत्यन्त श्रानन्दपूर्वक तपस्वीक कथन कें स्वीकार कएलथिन्ह तथा श्रो श्रोतहि रहए लगलाह।

एवंक्रमें जालपादक सम्पर्क मे रहैत देवदत्तक समय बितए लागल। एक दिन जालपाद रात्रि मे स्मशान जाए वटवृक्षक नीचाँ खीर एवं नैवेद्य सँऽ पूजा कएलैन्ह तथा श्रोहि नैवेद्य कें प्रत्येक दिशा मे फेकैत बजलाह—"हे देवदत्त! श्रहूँ कें एहि तरहें पूजा करए पड़त तथा पूजाक उपरान्त कहए पड़त "हे विद्युत्प्रभा एहि पूजा कें ग्रहण करू।"

एहि तरहेँ तपस्वीक आदेशानुसार देवदत्त प्रत्येक रात्रि कैँ ओहि वटवृक्षक समीप जाए विधिपूर्वक पूजा करए लगलाह। एक दिन पूजाक उपरान्त ओहि वटवृक्ष सँऽ एक दिव्य स्त्री बाहर भए देवदत्त सँऽ कहल जे—"हे महाभाग ! हमर मलिकाइन अहाँ केँ बजबैत छथि।"

एहि तरहेँ कहि ओ देवदत्त केँ ओहि वृक्षक धोधरिक अन्दर लए गेलीह। ओहि धोधरिक अन्दर जाए देवदत्त मणि निर्मित एक विलक्षण दिव्य भवन केँ देखलथिन्ह जकर मध्य रत्नक पलंग पर बैसल अपन अपूर्व दीप्ति सँऽ ओहि भवन केँ आलोकित करैत एक नितान्त सुन्दरि स्त्री छलीह।

देवदत्त केँ देखितहिँ अलंकार केँ झनकबैत एवं अपन फूलसन कोमल अंग केँ प्रदर्शित करैत ओ सुन्दरि देवदत्त केँ अभिवादन करैत स्नेहातुर भए बजलीह—"हे पुरुष श्रेष्ठ ! हम रत्नवर्ष नामक यक्षक पुत्री विद्युत्प्रभा थिकहुँ। जालपादक आराधना सँऽ प्रसन्न भए हम हुनका अष्ट-सिद्धि दए कृतार्थ करबैन्ह मुदा अहाँक आराधना सँऽ तँऽ हम तेहेन मुग्ध छी जे अहाँ केँ हम अपन प्राणहुँ तक न्योछावर कए देब। अतएव हे वीर ! आब अहाँ हमरा सँऽ विवाह कए लिअ।"

विद्युत्प्रभाक रूप एवं लावण्य पर देवदत्त मोहित भए ओकर कथन मानि अति आनन्दपूर्वक ओतहि रहए लगलाह। वस्तुतः अखने पुरुष पर ललित-ललनाक विविध अलंकार सँऽ अलंकृत एवं मादक नेत्रक कटाक्षक प्रहार होइछ ओ तत्क्षणे अपन सभ तपश्चर्या एवं जितेन्द्रियादिता केँ बिसरि भ्रमर सन सौरभ-मकरन्दक लोभ मे ओकर रूप पाश मे बन्हि जाइछ।

एवंक्रमेँ देवदत्त किछु दिन धरि आनन्दपूर्वक ओतए व्यतीत कएलैन्ह। विद्युत्प्रभा सेहो गर्भवती भए गेलीह। तदुपरान्त देवदत्त अपन गुरू जालपादक ओतए आबि भयातुर भए सभ वृत्तान्त हुनका सँ कहलथिन्ह।

देवदत्तक वृत्तान्त सुनि तपस्वी हुनक कार्यक समर्थन करैत बजलाह—"हे भद्र ! अहाँ जे किछु कएल से सभ यथार्थ छल मुदा आब अहाँ हमर आज्ञा मानि ओकर गर्भ केँ काढ़ि गर्भक नेना केँ आनि हमरा समर्पण कए दिअ।"

तपस्वीक आदेशानुसार देवदत्त पुनि ओतए गेलाह मुदा विद्युत्प्रभाक स्नेह-वशात् एवं अपन भावी पुत्रक स्नेहातुर भेला सन्ता ओ एहि दुष्कर्म केँ करबा मे असमर्थ भए विद्युत्प्रभाक सम्मुख ठकबकाए ठाढ़ रहलाह। देवदत्तक असमंजस सँऽ अवगत भए एवं हुनका चिन्ता सँऽ कातर जानि विद्युत्प्रभा स्वतः बाजि उठलीह —"हे नाथ ! हम जनैत छी जे जालपाद अहाँ केँ हमर गर्भ काढ़ि गर्भक नेना केँ अनबाक आदेश देलैन्ह अछि ! अहाँ तपस्वीक आदेशानुसार कार्य अवश्य करू अन्यथा हम स्वयं एहिकार्य केँ कए रहल छी। एहि रूपेँ विद्युत्प्रभा

देवदत्त सँऽ कहि अपन गर्भक नेना कें पेट सँऽ बाहर खींचि बजलीह—"एहि नेनाक खेनिहार कें विद्याधर बनेबाक हेतु लए जाउ। हम पूर्व जन्म मे विद्याधरी रही जे आपक कारणे यक्षी बनल छलहुँ। आब हमर शापक अंत भए गेल। अतएव हम अपन पूर्व स्थान कें जाए रहल छी। हमरा लोकनि कें ओतहि समागम होएत। एतबनें कहि विद्युत्प्रभा तँऽ अलक्षिता भए गेलीह मुदा देवदत्त शोकातुर भए ओहि नेना कें आनि जालपाद कें दए देलथिन्ह। जालपाद ओहि नेनाक माँस कें भूजि ओकर किछु अंश तँऽ ओ भैरव कें चढ़ेबाक हेतु देवदत्त के दए जंगल मे पठौलथिन्ह तथा बाँचल भाग खभटा ओ स्वतः खाए गेलाह।

देवदत्त जंगल सँऽ आपस आबि माँसक प्रसंग मे जालपाद सँऽ पुछलथिन्ह तथा अवगत भएला पर ओ जहिना जालपाद पर क्रोधक प्रदर्शन कएल कि तत्क्षणे ओ विद्याधर बनि अन्तर्धान भए गेलाह।

आकाश सदृश नील रंगक खड्ग, हार एवं केयुर सँऽ विभूशित भए जालपाद कें अन्तर्धान भेला पर देवदत्त अतिक्षोभक भावना मे विभोर भए विचारए लगलाह। विविध प्रकारक भाव एवं युक्ति कें ओ सोचैत अन्त मे वैताल साधनाक अतिरिक्त कोनो आन प्रतिकार नहि बुझि ओ रात्रि भेला पर श्मशान जाए मनुष्यक माँस लए वैतालक आवाहन कएलैन्ह। ओहि सँऽ जखन वैताल कें तृप्ति नहि भेलैक तँऽ स्वतः अपन शरीरक माँस काटि वैताल कें देब प्रारम्भ कएलैन्ह।

देवदत्तक कठोर आराधना सँऽ प्रसन्न भए वैताल देवदत्तक सम्मुख आबि कहल—"हे पराक्रमी पुरुष! अहाँ कें कोन वस्तु अभीष्ट अछि!" वैतालक प्रश्नक उत्तर दैत देवदत्त विज्ञप्ति कएल "हे वैताल! जँऽ अहाँ हमरा पर प्रसन्न छी तँऽ जालपाद कें मारबाक हेतु हमरा अहाँ विद्याधरक निवास स्थान कें लए चलू।"

देवदत्तक निवेदन पर वैताल तत्क्षणे हुनका अपन कंधा पर बैसाए विद्याधर नगर कें लए गेल। विद्याधर नगरक राजभवन मध्य रत्नक सिंहासन पर बैसल अभिमान मे आन्हर भेल विद्याधरक रूप मे जालपाद विद्युत्प्रभा कें संग बैसाए ओकर इच्छाक प्रतिकूल ओकरा अपन प्रेयसी बनेबाक उपक्रम मे लीन छलाह। एहि अनन्तर देवदत्त कें देखितहिं ओ भयातुर भए नुकेबाक उद्योग करए लगलाह मुदा देवदत्त वैताल के कहि हुनका पकड़ि ओहि दिव्य सिंहासन सँऽ नीचाँ खसबाए देल तथा वैताल सँऽ निवेदन कएल—"एहि धूर्त पाखण्डी कें मारिऔक नहि एकरा पुनि भूतल परहक अपन पर्ण-कुटी मे राखि दिऔक जे एकरा हेतु सर्वोत्कृष्ट स्थान थिक।"

देवदत्तक एहि तरहक उदारता पर पार्वती अत्यन्त प्रसन्न भए स्वतः ओतए आबि देवदत्त कें स्नेहयुक्त वचन मे कहलथिन्ह—"हे पुत्र! अहाँक असाधारण

आत्मोत्कर्ष सँ हम प्रसन्न छी। अतः हम स्वयं अहाँ केँ विद्याधरक राज्यक संग एहि जातिक समस्त विद्या केँ प्रदान करैत छी।"

एहि तरहेँ पार्वती देवदत्त केँ विद्याधरक समस्त विद्या एवं राज्य दए अन्तर्धान भए गेलीह तथा देवदत्त विद्याधरक राज्य प्राप्त कए सुखपूर्वक विद्युत्प्रभाक संग रहए लगलाह।"

मधुरभाषिणी बिन्दुरेखा एहि तरहेँ अपन स्वामी केँ परामर्श दैत पुनि कहए लगलीह "हे नाथ! कखन कोन कार्यक कोन फल प्राप्त होएत से ईश्वरेच्छा पर निर्भर रहैछ। अतएव बिन्दुमतीक इच्छानुसार हमर गर्भ फाड़ि गर्भक नेना केँ लए आउ!"

मुदा बिन्दुरेखाक कहनहुँ पर जखन शक्तिदेव ओकर गर्भ फाड़बाक हेतु तत्पर नहि भेलाह तँ आकाशवाणी भेल "हे शक्तिदेव! अहाँ बिना कोनो तारतम्य कएने ओकरा गर्भ केँ फाड़ि गर्भक नेनाकेँ लए बिन्दुमती केँ दए दिऔक। गर्भक नेना के मुट्ठी सँ पकड़ला पर ओ खड्ग बनि जाएत।"

एहि दिव्य वाणी केँ सुनि शक्तिदेव बिन्दुरेखाक गर्भ केँ फाड़ि गर्भक नेनाक गरदनि जखनहि पकड़लैन्ह कि बिन्दुरेखा तँ तत्क्षणे दिव्य रूप धारण कए अदृश्य भए गेलीह और गर्भक नेना खड्ग बनि हुनक हाथ मे आएल कि ओहो विद्याधर बनि गेलाह।

शक्तिदेव एहि वृत्तान्त केँ अपन पहिल स्त्री बिन्दुमती केँ विस्मित भए कहलथिन्ह।

बिन्दुमती तखन रहस्योद्घाटन करैत अत्यन्त स्नेहपूर्वक अपन स्वामी शक्तिदेव सँ बजलीह—"हे नाथ! हमरा लोकनि विद्याधर राजाक कन्या तीनू सहोदरे बहिन थिकहुँ जे आपक कारणे कनकपुरी सँ पतिता भए मर्त्यलोक मे उत्पन्न भेलहुँ। हमर एक बहिन कनकरेखा वर्द्धमान नगर मे राजा परोपकारीक कन्यारूप मे जन्म लए राजकन्या भेलीह जकर आपक अन्त स्वयं अहाँ देखल। दोसर बहिन बिन्दुरेखा थिकीह जकर मुक्ति तँ तत्काले भेल अछि तथा हम तेसर बहिन थिकहुँ। आब हमरो आपक अंत भए गेल। हमहुँ आब अपन प्रिय नगरीक यात्रा कए रहल छी। हमरा लोकनिक ज्येष्ठ बहिन चन्द्रप्रभा ओतहि छथि। आब अहूँ खड्ग-सिद्धिक प्रभाव सँ ओतए चलू तथा हमरा चारू बहिन सँ विधिवत् विवाह कए कनकपुरीक राज्य ग्रहण करू। हे स्वामी! विद्याधर जातिक लोक मे तँ रतिक खेल कामक आ ने कामक खेल धनक रक्षा करैछ। ओ लोकनि मात्र उद्देश्य पूर्त्तिक निमित्त काम एवं धनक सेवन करैत अछि!"

एहि तरहेँ अपन वास्तविक स्थिति कहनिहारि बिन्दुमतीक संगहि शक्तिदेव आकाश मार्ग सँऽ कनकपुरी गेलाह।

शक्तिदेव कैँ कनकपुरी अबितहिँ बिन्दुरेखा अत्यन्त मृदु भए कहल "हे नाथ अहाँ सर्वप्रथम तेसर मंजिलक तीनू कोठरी मे क्रमशः प्रवेश कए हमर तीनू बहिन कैँ पुनः जीवन प्रदान करिऔन्ह।" तदनुसार ओ असनहिँ तेसर मंजिलक प्रथम कोठरी मे प्रवेश कएलाह कि रत्नक आसन परहक निर्जीव शरीर जे कनकरेखा छलीह पुनि सजीव भए हुनका प्रणाम करैत अत्यन्त स्नेह सँऽ कहल—"हे नाथ! हमरहिँ खातिर अहाँ एतए धरि अएलहुँ।" एवंक्रमेँ ओ दोसर एवं तेसर कोठरी मध्य जाए दुहू निर्जीव शरीर कैँ पुनि सजीव कएल जे दुहू हुनक पूर्वक पत्नी बिन्दुरेखा एवं बिन्दुमती छलीह।

तदुपरान्त ओ हुनका लोकनिक ज्येष्ठ बहिन चन्द्रप्रभाक भवन मे गेलाह जे रमणीय सन्ध्या एवं प्रस्फुटित चन्द्रिकाक ज्योत्स्नासन मनोरम एवं स्वर्णकमलसन दीप्तिमान मुखमण्डल सँऽ साक्षात् लक्ष्मीक शोभा कैँ धारण कए पतिमिलनक उत्कण्ठा मे उन्मत्त भए अपन नेत्रक भृकुटि कैँ पथ अवलोकनार्थ ऊपर नीचाँ कए रहल छलीह।

शक्तिदेव कैँ देखितहिँ चन्द्रप्रभाक जाज्वल्यमान रूप जे अलौकिक भेलहुँ अभिभौतिक छल सूर्यक किरणक स्पर्श मात्रहि सँऽ कमलसन विकसित भए अपन मादक सौरभ कैँ स्वच्छन्दतापूर्वक प्रसारित करए लागल।

चन्द्रप्रभा पूर्ण रूपेँ शक्तिदेवक आदर सत्कार कएलाक उपरान्त अत्यन्त सौम्य भए कहल—"हे नाथ! विधिक लीला विचित्र होइछ। मोम मे मधुसन प्रेमहु मे विरहक निवास रहैछ। वस्तुतः विरहे ओ मूल पदार्थ थिक जाहि मे अमरत्वक गुण वर्त्तमान रहैछ तथा जाहि हेतु प्रेमक आविर्भाव होइछ। प्रेमक ज्वाला मे अपना कैँ दग्ध केनिहारक दुख कथमपि व्यर्थ नहि भए सकैछ। तीलक दाना फूलक सहवास सँऽ जँऽ पेरलहुँ जाइछ तैँऽ ओकर रूप सुगंधित तेल बनि प्रकट होइछ। हे सौभाग्यशाली! अहाँ जे वर्द्धमान नगर मे कनकरेखा नामक राजकुमारी देखने छलिऐक ओ चन्द्ररेखा, उत्स्थल द्वीपक धीवर कन्या बिन्दुमती शशिरेखा तथा बिन्दुरेखा हमर बहिन शशिप्रभा थिकीह। आब अहाँ हमरा लोकनिक संग हमर पिताजीक समक्ष जाए विधिवत् विवाह कए विद्याधर लोकक राज्य करू।"

तदुपरान्त शक्तिदेव चारू बहिनिक संग विद्याधर राजा शशिखण्डक ओतए गेलाह तथा अपन प्रियतमा लोकनिक संग हुनका सादर प्रणाम कएलथिन्ह।

शक्तिदेवक वृत्तान्त बूझि विद्याधरक राजा प्रसन्न भए विधिवत् अपन चारू पुत्रीक संग हुनक विवाह कए देल तथा विद्याधरक समस्त विद्याक संग कनकपुरीक राज्य दए शक्तिवेग नाम राखि अत्यधिक आदर-सत्कार कए कहल "हे पुत्र! अहाँ

विद्याधर जातिक राज्य तावत धरि करत जावत वत्सराज उदयनक पुत्र नरवाहनदत्त राज्य चलेबा योग्य भए जेताह। ओ अहाँ लोकनिक चक्रवर्त्ती राजा होएताह।"

एवं क्रमें शक्तिवेग कें ओ ओतए सँऽ अपन चारू कन्याक संग पुनि कनकपुरी कें प्रत्यागमन करबाओल।

शक्तिवेग विद्याधराधिप भए अत्यन्त गर्वपूर्वक साक्षात् लक्ष्मीसन स्वरूपवती अपन चारू प्रियतमाक संग कनकपुरीक राज्य करए लगलाह।

हे चन्द्रवंश-भूषण वत्सराज ! एहि तरहेँ मनुष्य भेलहुँ हम भगवान शंकरक प्रसादात् विद्याधर बनि विद्याधरक राज्य प्राप्त कएल तथा अपन भावी सम्राटक दर्शन कए पुनि अपन लोक कें जाए रहल छी। भगवान अहाँक सतत् मंगल करथि।"

विदग्ध्यख्याति लोभाय मम नैवायमुद्यमः।
किन्तु नानाकथा-जाल-स्मृति-सौकार्य-सिद्धये॥

—प्रथम लम्बक, प्रस्तावना।

लेखकक अन्य कृत

१. महाकवि विद्यापति नाटक—विद्यापतिक जीवन पर आधारित सरस भाषा, सुललित भाव एवं तथ्यपूर्ण कथनोपकथनक अपूर्व मैथिलीक नाटक। मूल्य २) टाका मात्र।

२. कन्दर्पीघाट नाटक—खण्डवलाकुलोद्भव राजा नरेन्द्र सिंह ओ पटनाक शासक रामनारायण सुधाक मध्य भेल युद्ध पर आधारित राष्ट्रीय भावना, ओजस्वी भाषा एवं सरस साहित्य मे मैथिलीक नाटक। मूल्य १) टाका मात्र।

३. शास्त्रार्थ नाटक—शंकराचार्य, मण्डनमिश्र एवं भारतीक मध्य भेल शास्त्रार्थ पर आधारित दार्शनिक तथ्य केँ सरस ओ मनोरञ्जक रूप मे प्रतिपादित मैथिलीक नाटक। मूल्य १) टाका ५० पैसा मात्र।

४. एकादशी—संहिता, जातक एवं कथासरित्सागर सँ संग्रहित एगारह गोट शिक्षाप्रद ओ अत्यन्त रोचक मैथिली कथाक संग्रह। मूल्य २) टाका मात्र।

पुस्तक प्राप्ति स्थान

ग्रन्थालय,

टावर चौक, दरभंगा

एवं

श्री अमरनाथ झा

द्वारा—बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना-१